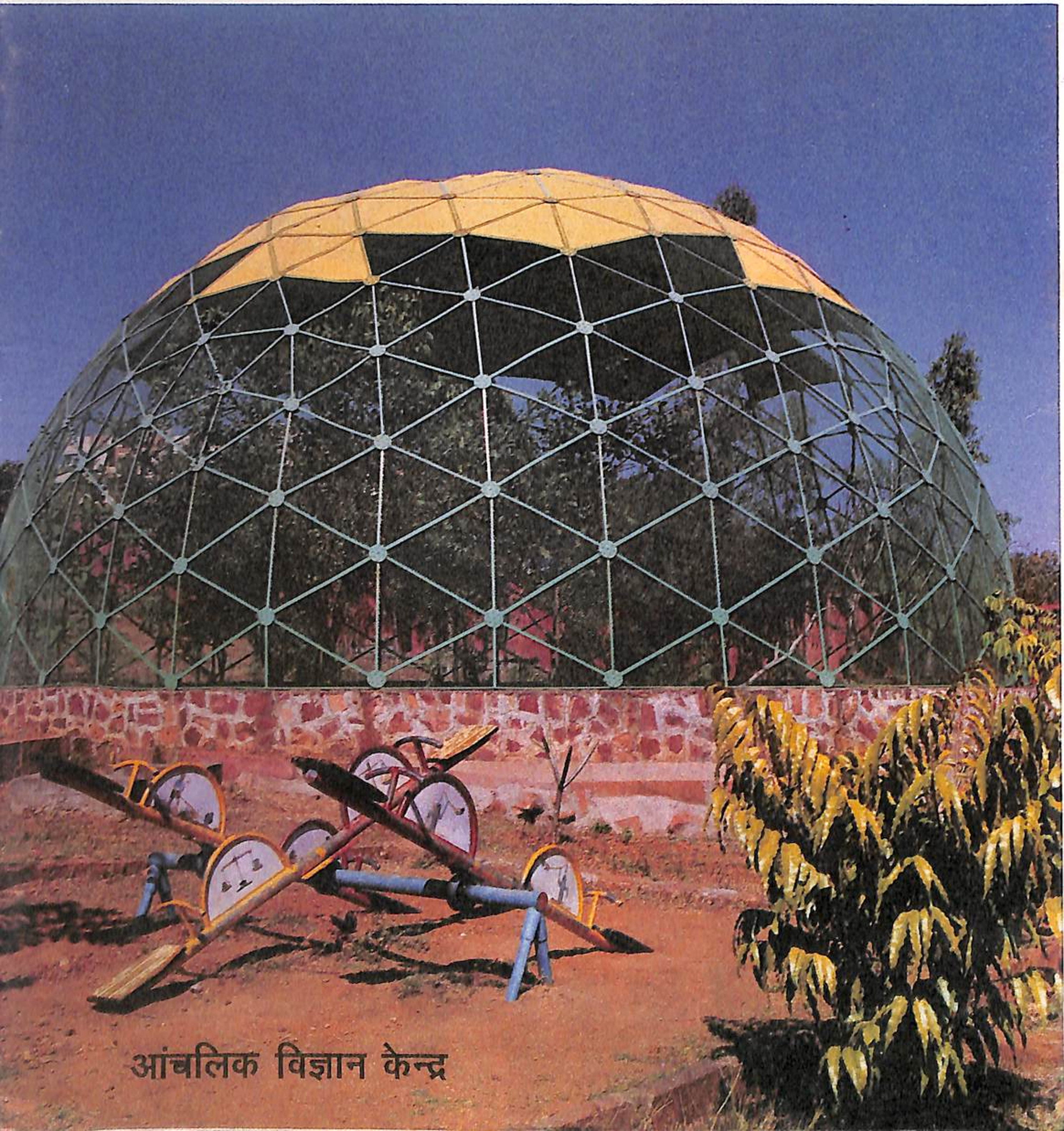
चकमक

मार्च,1997 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00



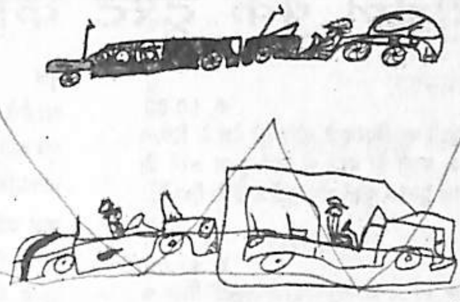
आंचलिक विज्ञान केन्द्र



मेघा कुशवाहा, पहली, बुदनी, म.प्र.



बावा जुगला वसावे, तीसरी, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र



ए. ईबयुग, ग्यारह वर्ष, भोपाल

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 12 अंक- 9 मार्च, 1997

सम्पादक

विनोद रायना

सह-सम्पादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

सम्पादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पाँच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज रु. 15.00 अतिरिक्त जोड़ें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : 563380

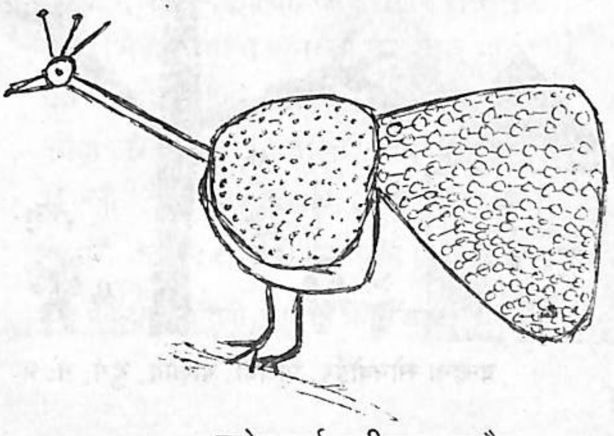
139 वें अंक में ....

आवरण : आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल में पालतू पशु-पक्षियों का एक घरोंदा। छायाचित्र : आनंद धवनकर।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



शुभम काशिव, चौथी, इन्दौर, म. प्र.



प्रमोद वर्मा, महीदपुर, उज्जैन, म. प्र.



सौरभ जोशी, साढ़े पाँच वर्ष, इन्दौर, म. प्र.

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दर : 31 मार्च 97 तक

छह माह : 25.00 रुपए

एक साल : 50.00 रुपए

सदस्यता दर : 1 अप्रैल 97 से

छह माह : 40.00 रुपए

एक साल : 75.00 रुपए

दो साल : 140.00 रुपए

तीन साल : 200.00 रुपए

आजीवन : 750.00 रुपए *

आजीवन : 1000.00 रुपए ०

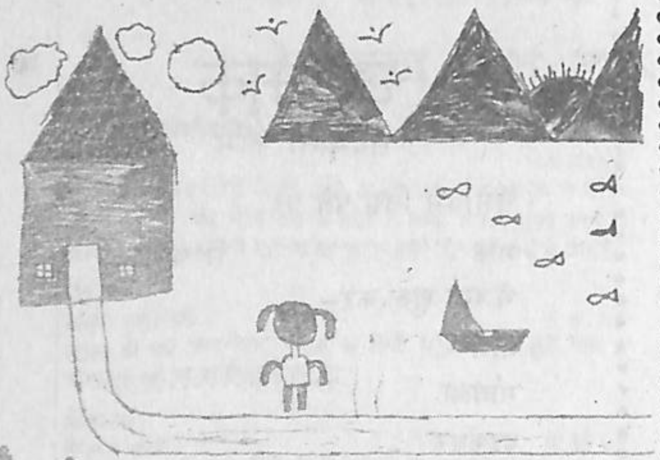
* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

० इस सदस्यता पर एकलव्य के भावी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

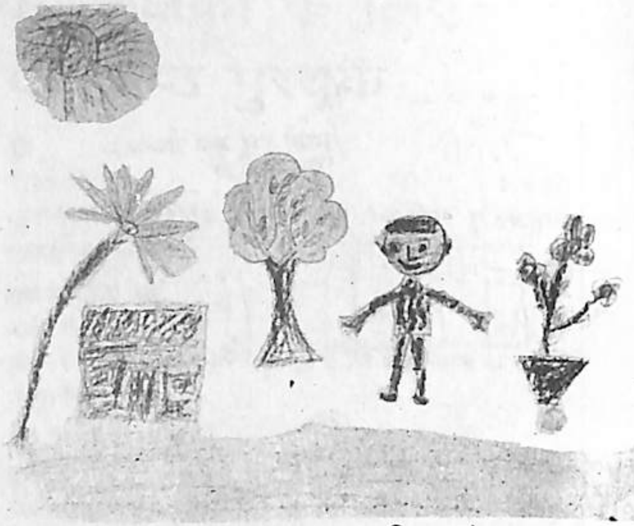
एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।





स्वर्णा शर्मा, छठवीं, खरोरा, रायपुर, म. प्र.



पूनम मिश्रा, भोपाल, म. प्र.

यहाँ से काट दें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

....

मोहल्ला

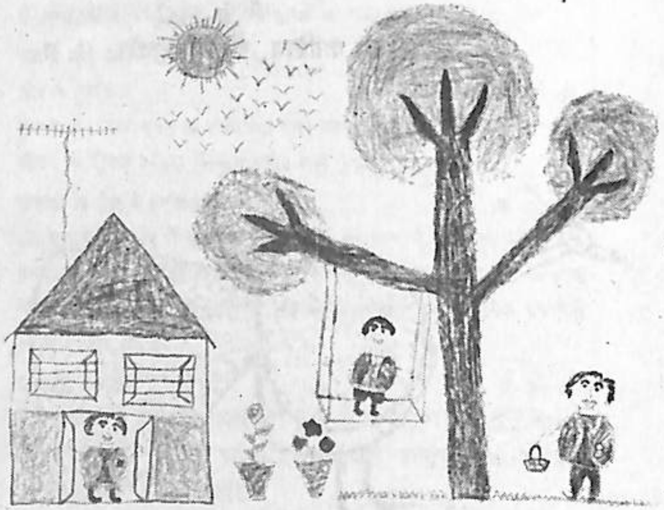
डाकघर ....

ज़िला ....

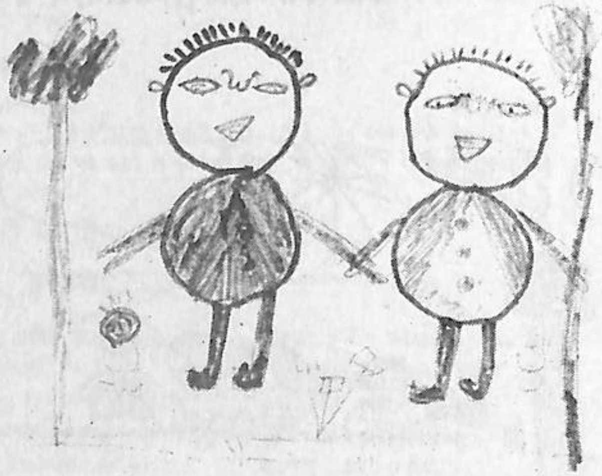
पिन ☐☐☐☐☐☐

....

....



वन्दना सोनबोईर, पाँचवीं, बालोद, दुर्ग, म. प्र.



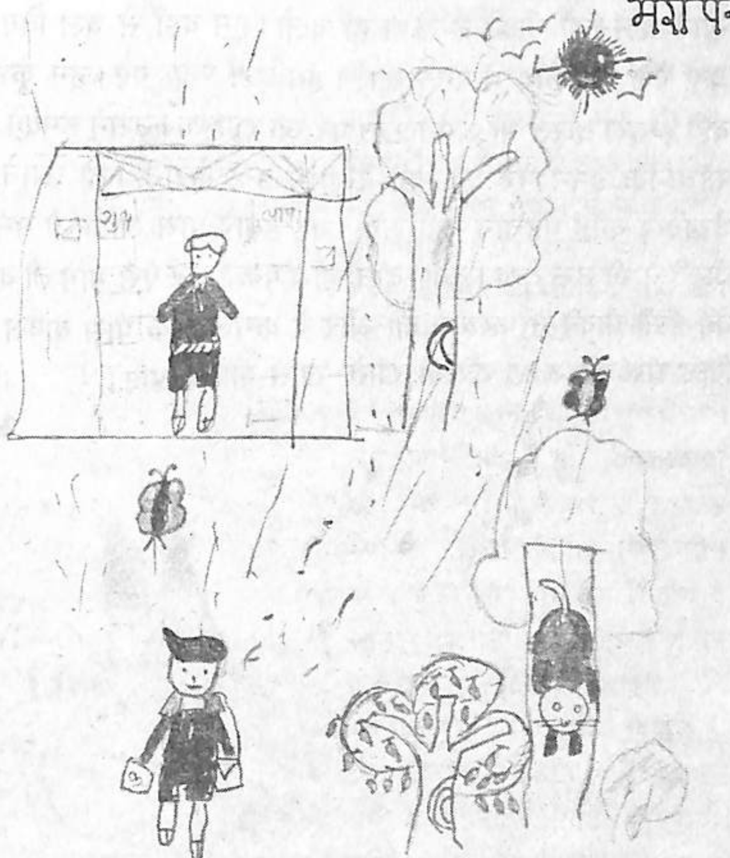
रूपेश कोष्ठी, दूसरी



बिल्ली फँसी

हम पगारा में रहते हैं। हमारा नया मकान बना है जो तालाब के किनारे है। हम उसमें रहते हैं, हमारे घर का पिछड़ा दरवाज़ा ठीक नहीं है। उसके ऊपर इतनी जगह है कि बिल्ली तक घुस सकती है। कई बार वहाँ से आकर बिल्ली दूध पी गई है। एक बार रात के क़रीबन बारह बजे थे, पिछड़े दरवाज़े से बिल्ली आई। आते समय तो वह आसानी से आई पर जाते समय बिल्ली घबराहट से भागने लगी और उसका पिछला पैर पल्ले की दरार में फँस गया। वह ज़ोर–ज़ोर से रोने लगी। मेरी मम्मी ने सुना तो मेरे छोटे भाई को जगाया। फिर उसने उसे लोहे की सींक से बाहर निकाला। तब से वह बिल्ली जो भागी कि अब आती भी है तो सामने के दरवाज़े से आती है।

कल्पना, सातवीं, पगारा, छिन्दवाड़ा, म.प्र.



मोनिका, आठवीं, छिन्दवाड़ा, म. प्र.

बसन्त

सरदी का करता अन्त
देखो आया बसन्त
धूप अब फैलती है
दिन भी बड़े हुए हैं
फटते नहीं हैं अब
हाथ-पैर और मुखड़े
नए पत्ते आएँगे

पुरानों की होगी बदली
फूल कली पर भौंरे
फूलों पर होगी तितली
कोयल की शुरू रटन्त
देखो आया बसन्त
हम हुए छोटे प्रसाद पन्त
देखो आया बसन्त

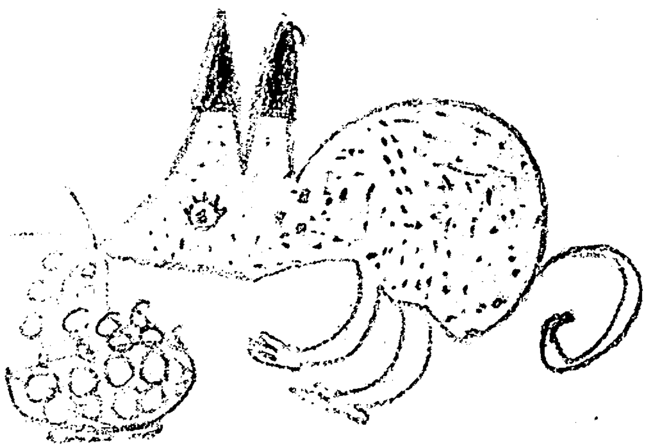
राजकुमार मुजाल्दा, गंधवानी, धार, म. प्र.

मेरा पन्ना

एक दिन

एक बार ठण्ड के दिन थे। मैं मेरे दोस्त जैकी के घर गया तो वहाँ मनीष भी बैठा था। उस दिन रविवार था। जैकी ने कहा कि आज मन नहीं लग रहा है तो मनीष बोला चलो करोंदी खाने चलें। तो जैकी ने कहा हाँ चलो। हम वहाँ से चल दिए। हम बहुत दूर आ गए तो जैकी ने कहा, यहाँ पेड़ की छाँव में रुक जाएँ। हम वहाँ रुक गए। हम कुछ चकमक के बारे में बात कर रहे थे तो वहीं हमारा दोस्त भी अपने खेत पर जा रहा था। उसने हमको देख लिया। हमने उसको नहीं देखा। उसने सोचा कि इनने मेरे को नहीं देखा मैं इन्हें डराऊँ। तो उसने अपना चेहरा ऐसा बना लिया कि उसको देखकर कोई पहचान नहीं सके। वह हमारे पास आया तो मनीष ने देख लिया मनीष ज़ोर से चिल्लाया। जैकी ने भी उसे देख लिया। दोनों हाथ पकड़कर ऐसे भागे तो कमलेश बहुत ज़ोर से हँसा। अब तो कमलेश की हँसी जैकी ने पहचान ली और वे कमलेश के पास वापस आए। और कमलेश से कुछ बातचीत की फिर घर की ओर करोंदी खाते–खाते वापस आए।

भूपेन्द्र व्यास, आठवीं, अजनास, देवास, म. प्र.



रामाश्रय गौर, चौथी, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

चूहा

चूहा करता चूँ चूँ
बिल्ली से कैसे बचूँ
बिल्ली करती म्याऊँ म्याऊँ
दो किलो दूध पी जाऊँ
भालू कहता हो हो
आलू बेचता हूँ कितना ही ले लो
हाथी दादा ख़ाली बैठे रहते
खाने को वे आगे रहते।

शिवलाल स्वामी, सातवीं, पूगल, बीकानेर, राजस्थान

चिड़िया

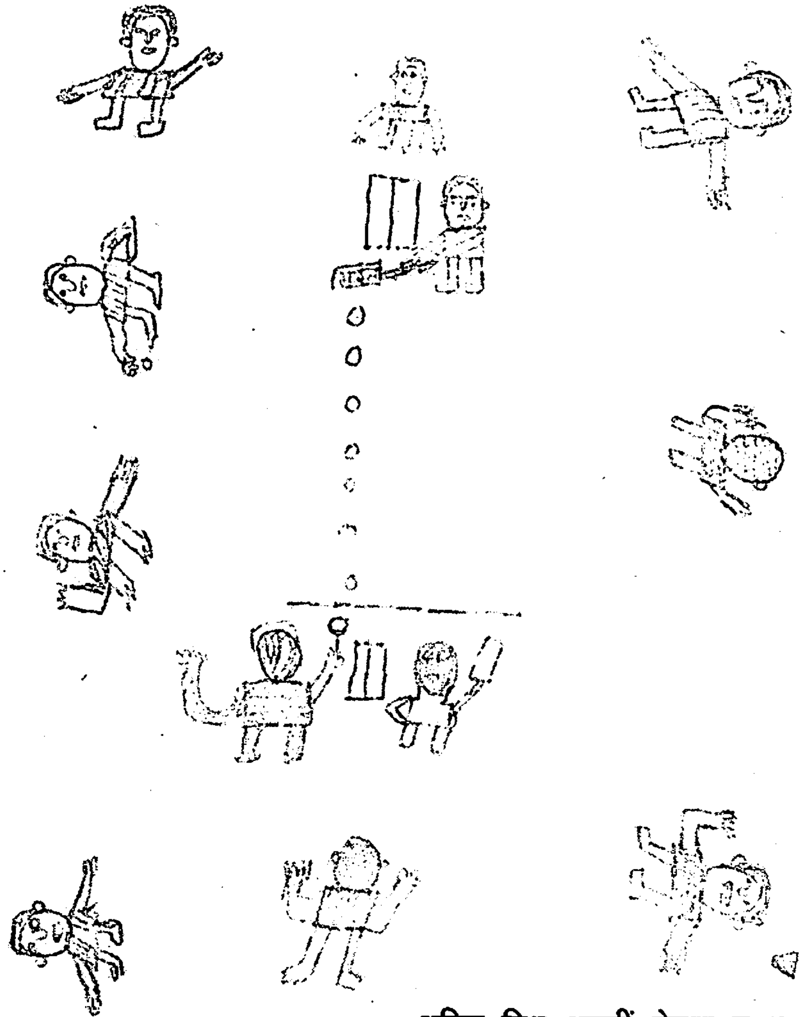
चिड़िया हूँ मैं चिड़िया हूँ
चीं चीं चीं चीं करती हूँ
दाने इकट्ठे करती हूँ
और अपना पेट भरती हूँ
और इस डाल से उस डाल तक
मैं जाकर बैठती हूँ और
शिकारी से मैं डरकर भागती हूँ।

प्रकाश कुमार दुबे, बारह वर्ष, भोपाल, म. प्र.

क्रिकेट



मेरा मन ज़्यादा खेलों में रहता है। क्रिकेट मुझे जान से प्यारी लगती है। पहले मैं बॉलर से डरता था कि कहीं बॉल लग जाएगी। मेरे दोस्तों ने मेरा हौसला बढ़ाया कि नहीं लगेगी। बस फिर क्या था। अब नित्य मैदान में जाता और अभ्यास करता। हमारे पास कोई पैड्स, हेलमेट की व्यवस्था नहीं थी। एक दिन हमारे विद्यालय में सूचित किया गया कि दूसरी टीम आने वाली है। सर ने दस लड़कों को चुन लिया। अब एक खिलाड़ी की आवश्यकता थी। मेरे दोस्तों ने सर से कहकर मेरा नाम लिखा दिया। दूसरी टीम पहुँच चुकी थी। टॉस हमारी टीम ने जीता। खिलाड़ी कोई भी ज़्यादा देर तक क्रीज पर टिक नहीं सका। मेरे को जरूरी था कि लास्ट विकेट है, जमकर खेलना पड़ेगा। मैं क्रिकेट की पोशाक पहनकर मैदान में आया। दूसरे छात्र कह रहे थे सचिन तेन्दुलकर आ गया। मैं क्रीज पर धुआँधार बल्लेबाज़ी करने लगा। मेरे 42 रन बने। अब हमारी पारी 72 पर उलट गई। विपक्षी टीम ने बल्लेबाज़ी करना प्रारम्भ किया। पर हमारे गेंदबाज़ों के सामने विपक्षी टीम के पाँव उखड़ गए। विपक्षी टीम 53 पर उलट गई। हमारी टीम 19 रनों से विजयी हो गई। मेरे को मैन ऑफ़ द मैच मिला।



अनिल मिश्र, आठवीं, देवास, म. प्र.

प्रवीण कुमार पानेरी, प्रारन, उदयपुर, राजस्थान

तरुमित्र

मेरे स्कूल में एक बार "तरुमित्र" नामक एक संस्थान की तरफ से दो लोग आए। तरुमित्र का मतलब है पेड़ों का दोस्त। उन लोगों ने हमें कई अच्छी बातें बताईं जो पर्यावरण को सुन्दर रखने में मदद करती हैं। हमें बताया गया कि किस तरह पानी बचाकर, पेड़ लगाकर और प्रदूषण कम करके हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। हमें यह भी पता चला कि हर देश का कम–से–कम एक तिहाई हिस्सा जंगलों से भरा रहना चाहिए। हर व्यक्ति को हर साल एक पेड़ लगाना चाहिए। इन सब बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मैं तरुमित्र का सदस्य बन गया।

के. रामदास, लोयाबाद, धनबाद, बिहार

मेरा पन्ना

बन्दरों को खिलाए चने

मैं अपने परिवार के साथ क्रिसमस की छुट्टियों में उज्जैन, इन्दौर, माण्डू, मंडलेश्वर, महेश्वर, भमलेश्वर और ओंकारेश्वर घूमने गया था। ओंकारेश्वर में मेरे साथ एक मज़ेदार घटना घटी। नर्मदा नदी के घाट पर बहुत सारे बन्दर थे। हमने मन्दिर में प्रसाद चढ़ाने के लिए चने ख़रीदे थे। मैंने अपने खाने के लिए भी एक पैकेट चने का ख़रीदा था। मैंने मुश्किल से 2–3 चने ही खाए होंगे कि एक बन्दर महाशय जाने कहाँ से टपक पड़े और उन्होंने मेरे घुटने पकड़कर चने छीनना चाहे। मेरी तो जान ही निकल गई। मैं सारे चने फेंककर भाग खड़ा हुआ। बाद में मुझे अपने हाथ से बन्दरों को चने खिलाने का मन हुआ। मैं एक पैकेट और ख़रीद लाया और चने हाथ में रखकर बैठा। कुछ बन्दर आए और मेरे हाथ को पकड़कर चने खाने लगे। उनके हाथ बहुत नरम–मुलायम थे। मुझे मज़ा आने लगा क्योंकि हाथों में गुदगुदी हो रही थी। मुझे देख मेरे छोटे भाइयों ने भी चने ख़रीदकर अपने हाथों से बन्दरों को चने खिलाना शुरू कर दिया। और मेरे चाचा ने यह मजेदार दृश्य कैमरे में क़ैद कर लिया।

मोहित शर्मा, भोपाल, म. प्र.



आशीष पारे, आठवीं, सोमगाँवकलाँ, म. प्र.

पहेलियाँ

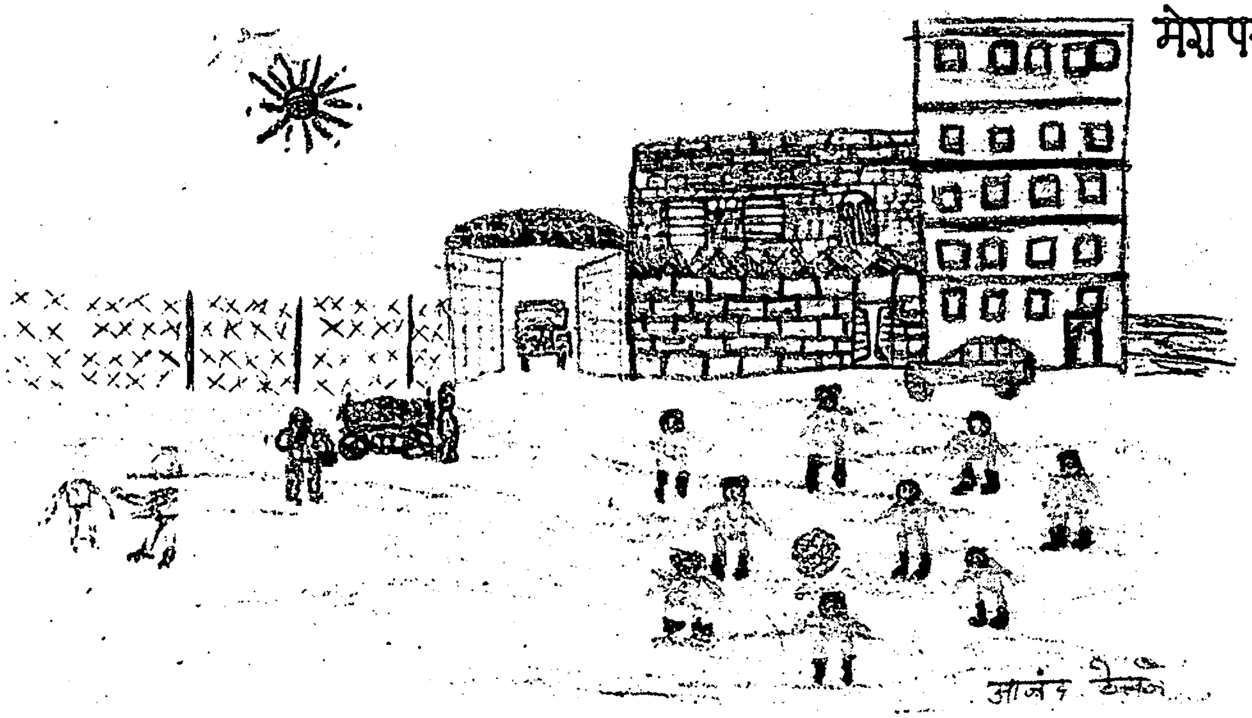
सफ़ेद बिल्लियाँ, हरी पूँछ
न जाने तो बाप से पूछ।

बसन्त सिंह नोरके, सातवीं, आगर मालवा, म. प्र.

एक महल फूलों से हलका
उसमें बैठी रानी मलिका।

शारेका खान, सोहागपुर, होशंगाबाद, म. प्र.

रुचि से अरुचि



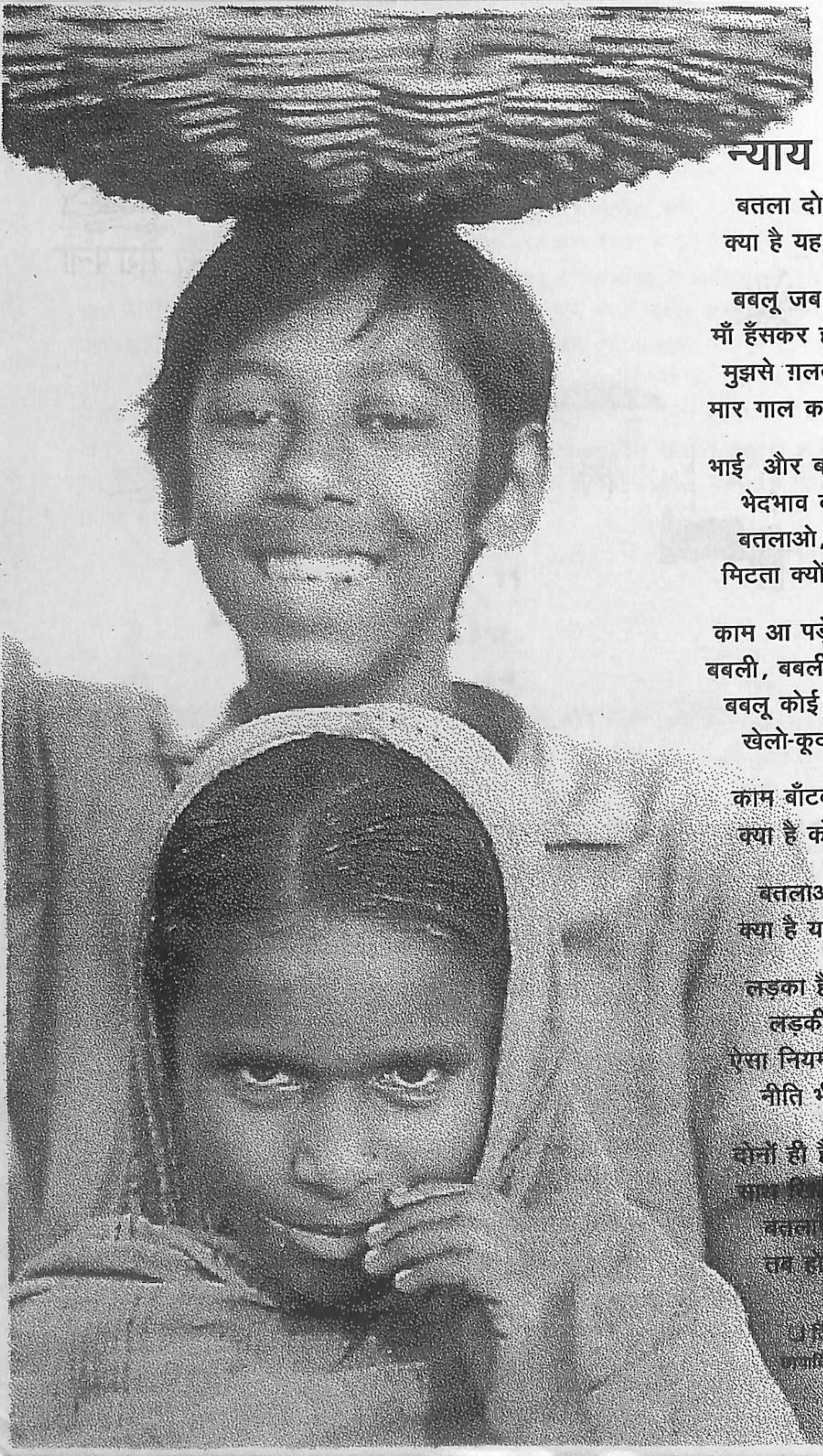
आंनद टेमने

मेरी ज़्यादा रुचि फुटबॉल खेलने में थी। पर मैं बहुत छोटा था। मुझे बड़े लड़के अपने साथ नहीं खिलाते थे। तो मैं उदास हो जाता था। अब मैंने मेरे पापा से एक फुटबॉल मँगवा ली और घर पर खेलने लगा। लेकिन घर पर भी एक समस्या थी कि खिड़कियों के शीशे टूट जाते थे। जिससे पापा डाँट मारते थे। इस कारण मैं कभी–कभी बाहर खेलने चला जाता था।

एक बार मैं बाहर मैदान में खेल रहा था तो मैंने एक बहुत ज़ोरदार किक लगाई। वह फुटबॉल एक लड़के की पीठ पर जा लगी। लड़का नीचे गिर गया तो मैं मुस्कुराया। जब लड़का उठा तो मैंने देखा कि लड़के के घुटने से ख़ून निकल रहा है। मैंने वहाँ पर हाथ लगा लिया जिससे ख़ून निकलना बन्द हो गया। फिर रुमाल को वहाँ पर बाँध दिया।

मैं लड़के को चिकित्सक के पास ले गया। वहाँ पर चिकित्सक ने लड़के को पट्टी बाँधी और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। और मैंने उससे क्षमा माँगी। मैं उस लड़के को उसके घर छोड़कर आया। उसके मम्मी–पापा से मैंने माफ़ी माँगी। फिर फुटबॉल घर पर जाते ही पापा को दे दी, मैं चुपचाप अन्दर चला गया। फिर मैंने उस दिन से फुटबॉल न खेलने की कसम खा ली। और मेरा मन फुटबॉल खेलने से रूठ गया।

पवन कुमार, बजावा, झुन्झुनु, राजस्थान



न्याय की बात

बतला दो, तुम सही-सही
क्या है यह, अन्याय नहीं?

बबलू जब शैतानी करता,
माँ हँसकर ही टाल है देती।
मुझसे ग़लती होती तो माँ,
मार गाल कर लाल है देती।

भाई और बहन का मिटता,
भेदभाव क्यों हाय, नहीं?
बतलाओ, तुम सही-सही,
मिटता क्यों, अन्याय नहीं?

काम आ पड़े तो माँ कहती,
बबली, बबली, जल्दी आओ।
बबलू कोई काम न करता,
खेलो-कूदो मौज उड़ाओ।

काम बाँटकर दोनों से लें,
क्या है कोई उपाय नहीं?

बतलाओ तुम सही-सही
क्या है यह अन्याय नहीं?

लड़का है तो राजा बेटा,
लड़की पर पाबन्दी है।
ऐसा नियम नहीं है अच्छा,
नीति भी ऐसी गन्दी है।

दोनों ही हैं, फूल बाग के,
साथ खिलें, दो राय नहीं।
बतलाएँ हम सही-सही,
तब होगा अन्याय नहीं।

— जितेन्द्र कुमार तिवारी
छायामित्र 'अनुभव' से साभार।

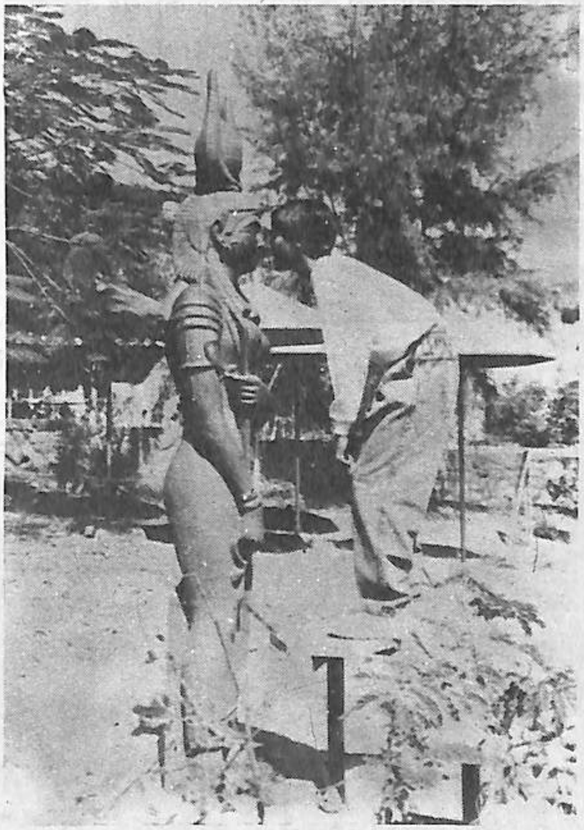
एक दावत विज्ञान की

कक्षा छह से सभी बच्चे विज्ञान विषय पढ़ते हैं। ज़्यादातर को सातवीं और आठवीं कक्षा पूरी करते-करते विज्ञान विषय एक हौवे की तरह लगने लगता है। कारण होता है स्कूल में होने वाली पढ़ाई का स्कूल के बाहर होने वाली घटनाओं से कटा होना। स्कूल के बाहर होने वाली विभिन्न घटनाओं को किसी एक विषय में बाँधना मुश्किल तो होता ही है क्योंकि ये घटनाएँ जीवन की विविधताओं से भरी होती हैं। फिर भी ऐसा नहीं है कि दोनों दुनियाओं में कोई सम्बन्ध ही न हो। लेकिन आमतौर पर विज्ञान जिस तरह स्कूल में पढ़ा/पढ़ाया जाता है, उसका जीवन से कोई जुड़ाव नहीं दिखता। जबकि बच्चे और बड़े भी रोज़मर्रा के जीवन में तमाम ऐसे काम करते हैं जिनकी मदद से विज्ञान के किसी न किसी सिद्धान्त को समझा जा सकता है। जैसे पानी उबालना, चाय बनाना, भागना, गेंद उछालना, साइकिल चलाना आदि।

विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित कई चीज़ें हम अपने आसपास रोज़ ही देखा करते हैं। जैसे रेलगाड़ी, रेडियो, टी.वी. आदि। विज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों को दिखाने वाले ढेरों मॉडल अगर तुम्हें एक जगह मिल जाएँ तो तुम उस जगह को क्या कहोगे? भोपाल में ऐसी ही एक जगह है, आंचलिक विज्ञान केन्द्र। यह केन्द्र राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, भारत सरकार द्वारा संचालित है।

विज्ञान केन्द्र भोपाल में श्यामला पहाड़ी की पथरीली ढलान पर स्थित है। इस केन्द्र में खेल-खेल में ही कई कठिन सिद्धान्तों को आसानी से समझा जा सकता है। यहाँ मुख्य दरवाज़े से अन्दर पहुँचते ही टिकिट ख़रीदने के लिए बना छोटा-सा टिकिटघर दिखाई देता है। टिकिट ख़रीदकर ढलानदार सड़क से आगे बढ़ते हैं। इमारत के पहले ही दाहिनी ओर विज्ञान उद्यान दिखाई देता है। इस उद्यान में खुले आसमान के नीचे, ढलानदार रास्तों पर विज्ञान के दसियों खिलौने हैं। हर एक में विज्ञान के अलग-अलग सिद्धान्त के साथ मज़ा भी है।

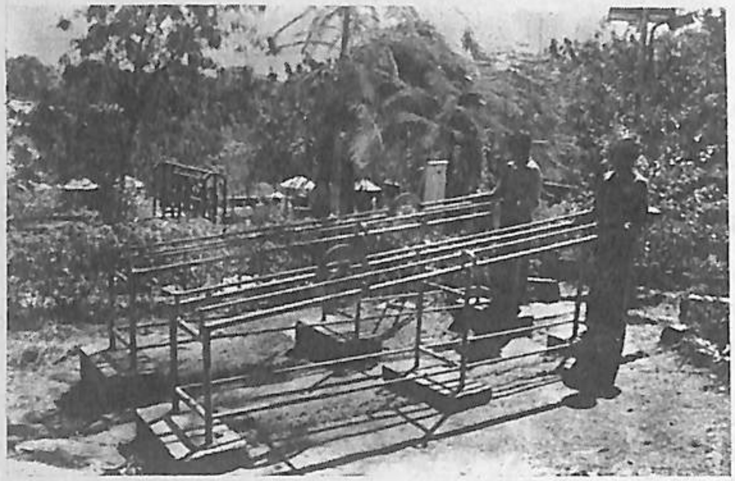
विज्ञान उद्यान में सबसे पहले अपनी ओर ध्यान खींचती हुई एक मूर्ति दिखाई देती है। किसी यूनानी देवता जैसी यह मूर्ति यह बताती है कि ध्वनि की तरंगें भी एक जगह से दूसरी जगह तक चलती हैं। इस मूर्ति की जुड़वाँ दूसरी मूर्ति, पहली से कोई एक सौ मीटर दूर लगाई गई है। दोनों मूर्तियाँ एक नली से जोड़ी गई हैं। नली ज़मीन के अन्दर से गई है। एक मूर्ति के सामने खड़े होकर कुछ बोला जाए तो दूसरी मूर्ति के सामने खड़ा अन्य व्यक्ति उसे सुन सकता है। जिस तरह तुम माचिस की डिब्बियों से टेलीफ़ोन बनाकर खेलते हो वैसा ही यहाँ होता है।



आईसिस स्पिक *- बोलने वाली मूर्ति।*

यहाँ आवाज़ दोनों मूर्तियों के बीच लगी नली में मौजूद हवा के ज़रिए सफ़र करती है।





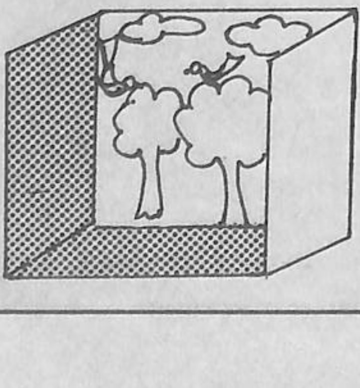
दौड़ कौन जीतेगा

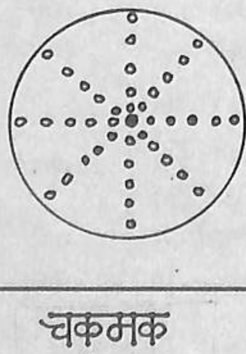
दोनों हथेलियों के बीच पकड़कर घुमाने वाली फिरकनी के काग़ज़ पर एक ओर पिंजरा और दूसरी ओर तोता बनाकर, तोते को पिंजरे में बन्द करने का खेल तुमने खेला होगा। ऐसे ही एक खिलौने के साथ-साथ इसी से मिलता-जुलता एक और खिलौना है यहाँ। 'निपकोव की चक्ती' नाम का यह खिलौना टिन का बना एक बड़ा सा बॉक्स है। बक्से के अन्दर एक चित्र लगा है। चित्र के आगे एक गोल चक्ती लगी है जिसमें छेद बने हैं। यूँ ही देखने पर छेदों में से चित्र थोड़ा-थोड़ा दिखाई पड़ता है। लेकिन जब हम उस गोल चक्ती को तेज़ी से घुमाते हैं तो चित्र पूरा दिखाई देने लगता है।

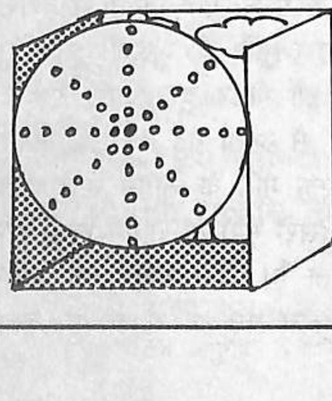
यहाँ से आगे चलते हैं तो लोहे के पाइप से बने एक समान दो स्टैंड ज़मीन में गड़े मिलते हैं। उन पर एक-एक लोहे की घिर्री रखी है। दोनों स्टैंड समान ढलान देकर बनाए गए हैं। हम पहले एक घिर्री को धकाते हुए ऊपर की ओर लाए। उसे अपने मित्र को पकड़े रहने को कहा फिर दूसरी घिर्री ऊपर तक लाए। दोनों को एक साथ छोड़ा। पर यह क्या एक घिर्री तो पहले नीचे पहुँच गई तेज़ी से चलकर। दूसरी बाद में पहुँची आराम से चलती हुई। कारण ढूँढा तो पाया कि जो घिर्री जल्दी पहुँच गई उसमें बीच में यानि घिर्री के केन्द्र में भार लगा था। और दूसरी सुस्त चाल वाली घिर्री के किनारों पर

बनाकर देखो

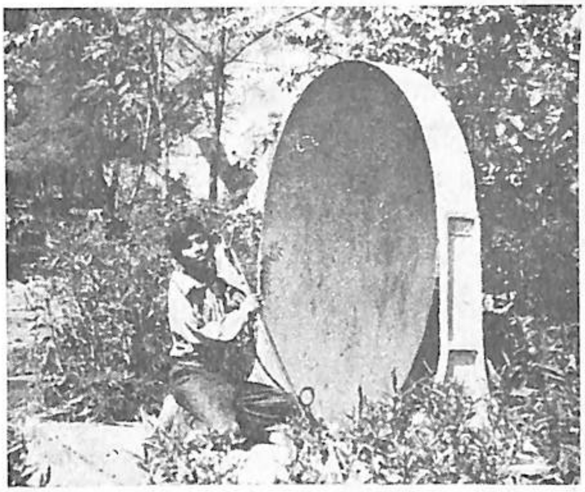
तुम निपकोव की चक्ती अपने लिए ख़ुद बना सकते हो। एक चौकोर से डिब्बे की जुगाड़ कर लो। डिब्बा टिन का या मोटे काग़ज़ का भी हो सकता है। डिब्बे के अन्दर एक सतह पर कोई चित्र चिपका लो। जिस सतह पर चित्र चिपकाया है उसके सामने वाली सतह को काट लो। अब एक मोटे गत्ते का टुकड़ा लेकर डिब्बे की कटी हुई सतह के हिसाब से गोलाई में काट लो। इस गोल टुकड़े पर केन्द्र से किनारों तक सीधी रेखाओं में छोटे-छोटे छेद कर लो। फिर इस चक्ती के बीचोबीच एक कील लगाकर इसे डिब्बे के साथ लगा दो। चक्ती इस तरह लगाना कि उसे घुमा सको। पहले चक्ती को बिना घुमाए उसके छेदों में से चित्र देखो फिर चक्ती घुमाकर चित्र देखो। क्या फ़र्क दिखता है दोनों स्थितियों में? छेद वाली रेखाओं की संख्या बढ़ाने या घटाने पर क्या फ़र्क़ पड़ता है?

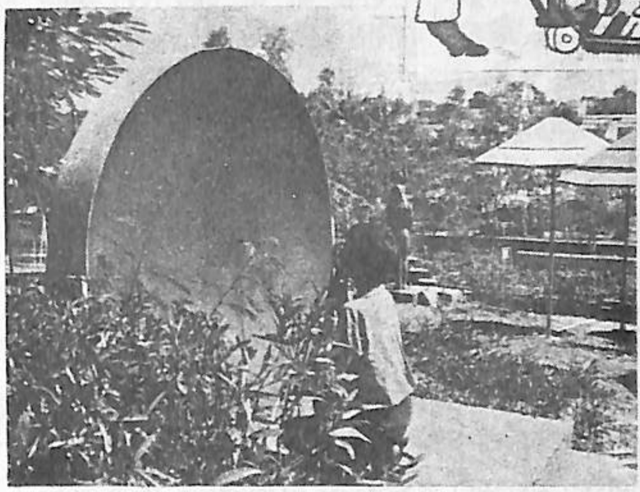












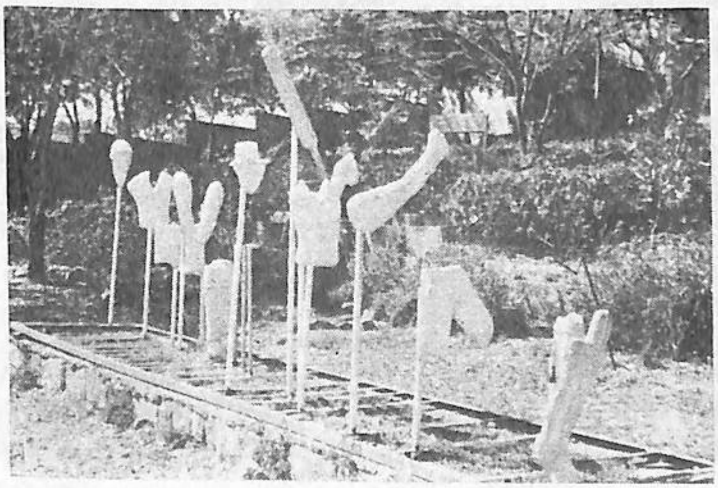
***बगीचे** में फुसफुसाहट*

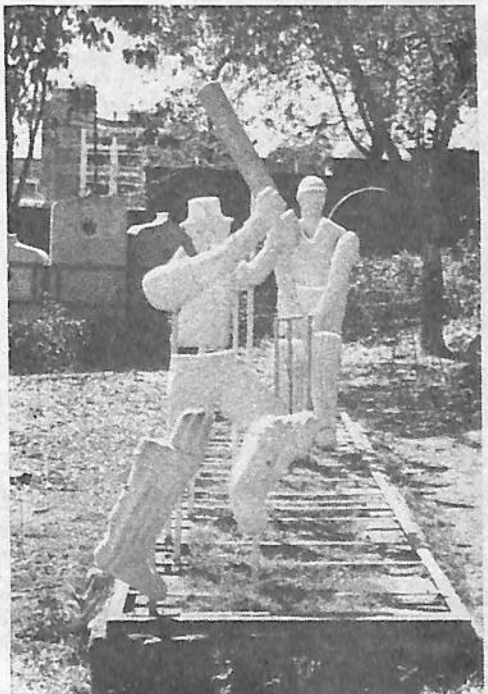
भार लगा हुआ था। तुम सोचकर देखना ऐसा क्यों होता है?

विज्ञान उद्यान में और भी खिलौने आसपास दिखते हैं। पर हम जहाँ रुके वहाँ तवे की आकृति की बड़ी-सी प्लेट खड़ी लगी है। उसके बिल्कुल सामने लगभग पच्चीस मीटर की दूरी पर वैसी ही दूसरी प्लेट लगी है। दोनों के गहराई वाले हिस्से एक दूसरे के सामने हैं। एक प्लेट के एक ख़ास बिन्दु के सामने बैठकर धीरे से कुछ बोला जाए तो दूसरी के सामने एक ख़ास बिन्दु पर वह सुना जा सकता है। इसमें होता यह है कि जब हम एक प्लेट के सामने बैठकर बोलते हैं तो आवाज़ (ध्वनि की तरंगें) उस केन्द्र बिन्दु से हवा में चलती हुई उस प्लेट तक जाती है, वहाँ उत्तलाकार सतह से टकराकर फिर सीधी चलती हुई, कुछ दूरी पर लगी उसी तरह की दूसरी प्लेट से टकराती है। और तब वही आवाज़ वहाँ खड़े दूसरे व्यक्ति को सुनाई देती है।

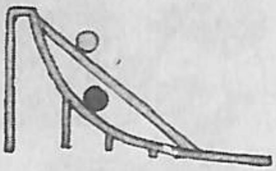
तुममें से कईयों ने डिस्क एंटीना देखा होगा। डिस्क एंटीना रेडियो तरंगों को पकड़ता है जिससे कई चैनल के कार्यक्रम टी.वी. पर देखे जा सकते हैं। डिस्क एंटीना बड़े-से तवे के आकार का ही होता है।

इस खिलौने को देख-समझकर आगे बढ़े तो क्रिकेट खिलाड़ियों के अलग-अलग हिस्से ज़मीन पर कोई दस-बारह मीटर में लगे दिखाई दिए। कहीं हाथ





***गहराई** का बोध*

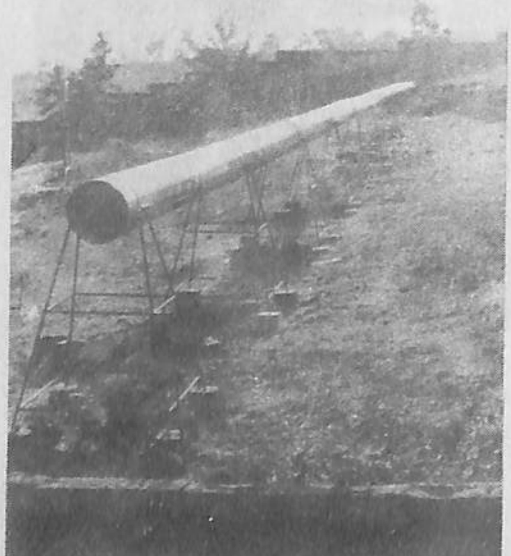


लगा था तो कहीं पैर। कहीं धड़ था तो कहीं बल्ला। लेकिन जब ये सारे टुकड़े मिल-मिलाकर दो खिलाड़ी खेलते हुए दिखे तो मज़ा आ गया। इस खेल को देखने की सही जगह पर पहुँचकर, एक आँख से देखा तो हाथ, पैर, धड़, बल्ला सभी अपनी अपनी जगह पर लगे दिखे। मतलब यह कि एक आँख से देखने पर हम दूरी का सही अन्दाज़ नहीं लगा पाते इसलिए अलग-अलग दूरी पर रखी ये चीज़ें भी हमें एक साथ जुड़ी दिखाई दीं। जबकि दोनों आँखों से देखने पर उनके बीच की असल दूरी पता चल जाती है। (चकमक के पिछले अंक में तुमने इस बारे में पढ़ा होगा।)

थोड़ा और आगे बढ़े तो एक लम्बी-सी नली स्टैंड पर लगी देखी। इसे प्रतिध्वनि पैदा करने वाली नली कहते हैं। इस नली में मुँह लगाकर कुछ बोलें तो अपने को खुद की आवाज़ की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है। तुम कभी किसी ख़ूब बड़े बन्द ख़ाली कमरे में खड़े होकर चिल्लाओ तो तुम्हें अपनी ही आवाज़ कई बार सुनाई देगी। शायद तुमने कभी ऐसा किया हो। दरअसल होता यह है कि हमारी आवाज़ दीवारों से टकराकर लौटती है। हमारी पहली आवाज़ जो हमने बोली है उसे हम सबसे पहले सुनते हैं। तब तक दीवार से टकराकर लौटने वाली हमारी आवाज़ फिर सुनाई देती है। और इसी तरह थोड़ी-थोड़ी देर में आने वाली वही आवाज़ दो तीन बार सुनाई देती है। आवाज़ को चलने के लिए हवा का होना ज़रूरी है अब चूँकि हवा किसी बाधा से टकराकर वापस लौटती है तो साथ में आवाज़ भी वापस आती है और बीच में उसे सोख लेने या बिखरा देने वाली वस्तु न हो तो आवाज़ हमें ही वापस सुनाई देती है।

विज्ञान केन्द्र की इमारत के दूसरी ओर भी इसी तरह का उद्यान है। इसमें लगे झूले दूर से ही दिखाई दे रहे थे। यहाँ कई तरह के झूले लगे हैं। कम लम्बाई का झूला जिसमें ज़्यादा लम्बी झूल नहीं ली जा सकती। ज़्यादा लम्बाई का झूला जो दूर तक झुलाता ले ज़ाता है। एक और झूला है, इसमें एक ही स्टैंड पर दो झूले लगे हैं और वे एक पट्टी से आपस में जुड़े हैं। इनमें से किसी एक झूले को गति देने यानि झुलाने पर एक मज़ेदार चीज़ देखी। यह झूला धीरे-धीरे रुकने लगा तब दूसरा झूला अपने आप हिलने लगा। और फिर दूसरा झूला तेज़ होने लगा, पहला धीरे-धीरे अपने आप रुक गया।

इसके बाद लीवर के सिद्धान्त पर आधारित कई खिलौने देखे। इनकी अनोखी करामात देखकर बहुत मज़ा आया। पचास किलो, बीस किलो वज़न को जहाँ बच्चे भी आसानी से उठा रहे थे, वहीं इतना वज़न उठाने में बड़े-बड़ों के पसीने छूट रहे थे। ऐसे

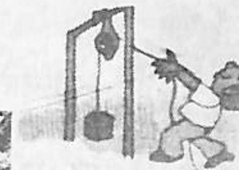


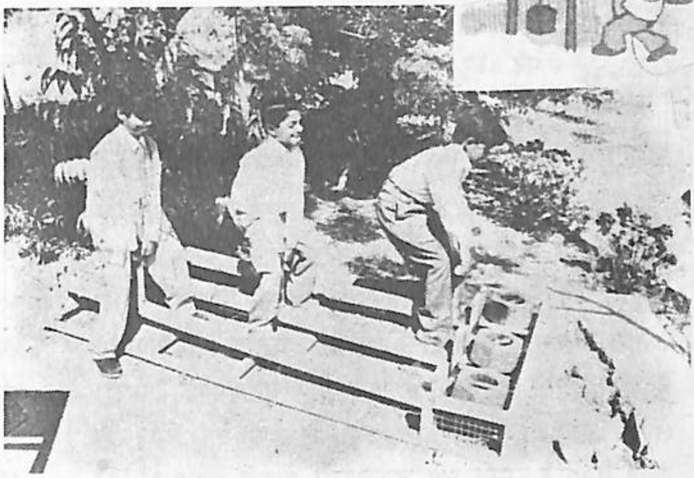
विज्ञान केन्द्र के सौजन्य से

प्रतिध्वनि नलिका

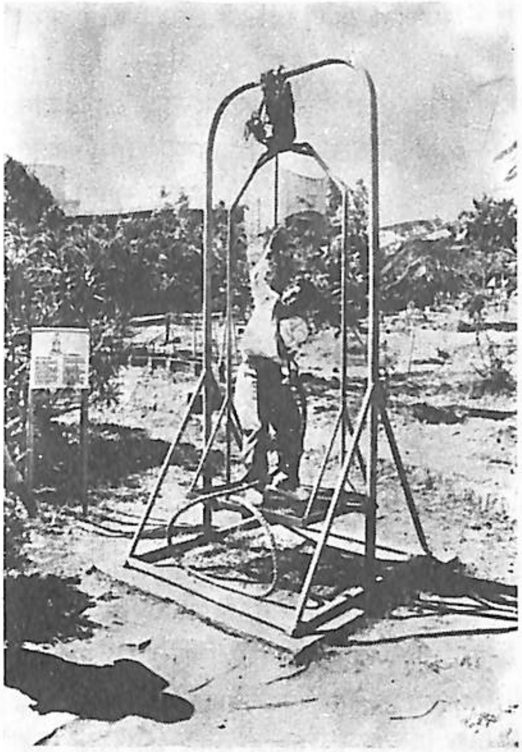


सी-सॉ कौन किसे उठा रहा है।





कौन *कितना वज़न उठाता है।*



अपना *वज़न खुद उठाओ।*

वज़न उठाने वाले कई खिलौने हैं यहाँ। यहीं पर सी-सॉ भी लगे हैं। एक में दोनों ओर की लम्बाई बराबर है तो दूसरे में एक ओर की लम्बाई ज़्यादा, दूसरी ओर की कम है। इन्हीं में से एक सी-सॉ में एक छोटा बच्चा अपनी माँ या पिता को भी उठा सकता है। तुम अपना दिमाग़ दौड़ाकर अन्दाज़ा लगाओ कि ऐसा सी-सॉ कौन-सा होगा।

यहीं पर घिरनी के खिलौने भी हैं। एक में तो हम ख़ुद खड़े होकर अपना ही वज़न उठा सकते हैं। यह उस खिलौने में लगी घिरनी का ही कमाल है।

अब तक काफ़ी थकान होने लगी थी इसलिए मैदान छोड़कर इमारत की तरफ चल दिए।

अन्दर प्रवेश करते ही देखा सामने ही कुछ बच्चे ऊपर की ओर देखकर उछलकूद कर रहे थे। हमारा ध्यान वहाँ गया तो एक बड़ा-सा रंगीन गुब्बारा दिखाई दिया। कुछ देर में गुब्बारा नीचे आने लगा। बटन दबाया, थोड़ी देर बाद फिर गुब्बारा ऊपर उठने लगा। बटन दबाने से गुब्बारे में गरम हवा भरने लगती है जिससे गुब्बारा ऊपर उठने लगता है।

इस गुब्बारे के दाएँ-बाएँ दोनों ओर बड़े-बड़े कमरे दिखाई दिए। पहले हम गए दाहिनी ओर के कमरे में, इसका नाम है 'मनोरंजक दीर्घा'। यहाँ लगभग 15-20 बड़े-बड़े विज्ञान के खिलौने लगे हैं। हर एक के साथ एक तख्ती पर उस खिलौने में हो रही प्रक्रिया की जानकारी दी गई है।

सबसे पहले हम जिस खिलौने के सामने रुके उसका नाम है 'ऊपर उठती हुई चिन्गारी।' इसमें लोहे की दो छड़ लगी हैं जो ऊपर की ओर



ऊपर *उठती हुई चिंगारी*



जाते-जाते दूर होती जाती हैं। इसमें कुछ ऐसी व्यवस्था की गई है कि बटन दबाने पर छड़ों के बीच में, नीचे से ऊपर जाती हुई चिन्गारी दिखाई पड़ती है। जैसे बादल टकराने पर बिजली चमकती है उसी तरह।

इसी कमरे में तीन प्राथमिक रंगों के मिलने पर बनने वाले विभिन्न रंगों को दिखाता एक ख़ूबसूरत मॉडल भी है। यहाँ तीनों रंग लाल, नीला, पीला अलग-अलग पारदर्शक काँच के चपटे बक्सों में रखे हैं और तीनों बक्से एक के ऊपर एक जुड़े हैं। रंग तरल अवस्था में हैं। यह बक्सा एक सी-सॉ की तरह लगा हुआ है। जब हम बक्से को अपनी ओर झुकाते हैं तो रंग बहने लगते हैं। और फिर तीन रंगों के कई रंग बनने लगते हैं। तुम ख़ुद भी इसे करके देख सकते हो। लाल, पीला और नीला रंग लेकर उन्हें मिलाकर नए रंग बनाओ और हर रंग के कितने शेड्स बना सकते हो, देखो!

इसी कमरे में घुलनशीलता को समझाने वाला एक खिलौना है - और हैं विभिन्न प्रकार के आइने। किसी में हम मोटे और छोटे दिखाई दिए तो किसी में लम्बे - पतले। यहीं एक दर्पण था जिसके सामने खड़े होकर उसी से जुड़ा दर्पण वाला दरवाज़ा थोड़ा बन्द किया तो आईने में हमें दूर-दूर तक अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। तुमने शायद नाई की दुकान पर ऐसे आइने देखे होंगे। अगर तुम्हें कहीं आमने-सामने लगे आइने मिलें तो उसके सामने खड़े होकर देखना और अपने प्रतिबिम्ब गिनना।

मनोरंजक विज्ञान दीर्घा में आने के बाद तो हम अपनी थकान भूल ही गए। आख़िरकार आइने में अपने मज़ेदार रूप देखकर हँसते-हँसते बाहर निकले। अब चल पड़े बाईं ओर के कमरे की तरफ। यह कहलाता है क्रिया केन्द्र। यहाँ रखे मॉडलों से दर्शक खुद करके देखते हैं और खुद समझते हैं।

इसी दिशा में आगे चलने पर हिमालय दीर्घा में प्रवेश करते हैं। इस कमरे में हिमालय श्रृंखला में स्थित चोटियों की ऊँचाई, उनकी स्थिति की पहचान होती है। हिमालय के पेड़, पौधे, फूल, जानवर आदि की जानकारी मिलती है। पहाड़ बनने की क्रिया को समझाने वाले मॉडल भी यहाँ हैं।

घूमते-फिरते जब हम वापस गुब्बारे के पास

वज़न उठाने का एक आसान तरीक़ा - लीवर

तुम्हारे स्कूल या घर के आसपास कोई भारी चीज़ पड़ी हो तो उसे अपने हाथों से उठाने या सरकाने की कोशिश कर के देखो। अब एक मोटा डण्डा ले लो। डण्डे का एक सिरा उस भारी चीज़ के नीचे फँसा लो। डण्डे के नीचे उस भारी चीज़ से थोड़ी दूरी पर कोई पत्थर या ईंट से टेक लगा लो (चित्र में देखो)। डण्डे के दूसरे सिरे को दबाकर वज़न उठाने या सरकाने की कोशिश करो।

क्या अब वज़न आसानी से उठ गया? डण्डे के नीचे लगाई टेक को भारी चीज़ से अलग-अलग दूरी पर रखकर इस प्रयोग को दोहराओ।

दूरी बदलने पर क्या फर्क़ पड़ता है?

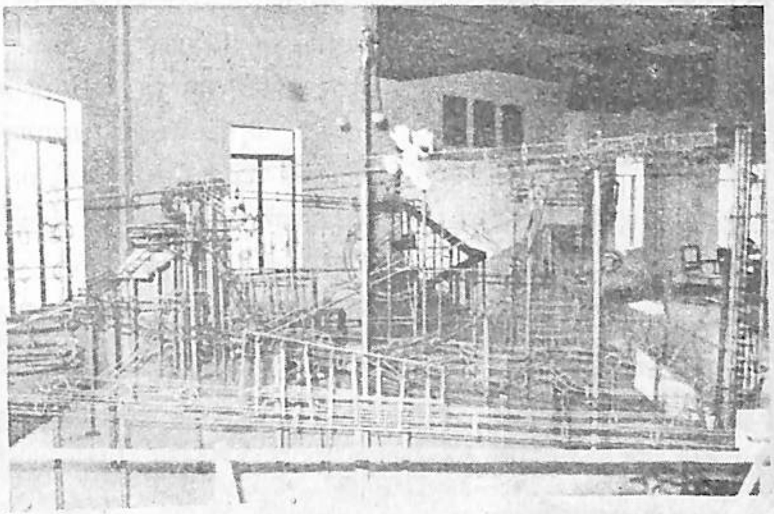
डण्डा दबाने में तुम्हारा हाथ जितना नीचे गया उसकी तुलना में वज़न कितना ऊपर उठा?

इस प्रयोग में वज़न को और अधिक सरलता से उठाने के लिए क्या करोगे?



(होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम की पाठ्य पुस्तक 'बाल वैज्ञानिक' कक्षा-8 से)





उर्जाधारी गेंदे

आए तो ऊपर जाती हुई सीढ़ियों की तरफ चल पड़े। इमारत की पहली मंज़िल पर पहुँचे तो देखा दाहिनी ओर बड़ा-सा, लोहे के तारों का बना एक जटिल मॉडल। सबसे पहले वहाँ लगी तख्ती पर लिखे अनुसार हमने बटन दबाया। एक कोने से स्क्रूनुमा घूमते पाइप में से गेंदें निकल-निकलकर विभिन्न रास्तों से होती हुई चलने लगीं। हम भौंचक्के होकर बस देखते ही रहे, कौन-सी गेंद कहाँ जा रही हैं। इसमें गेंदों को कुण्डलीनुमा सीढ़ी से ऊपर लाया जाता है फिर उसे धक्का देकर, यानी ऊर्जा देकर आगे का रास्ता दिखाया जाता है। एक-एक करके अलग-अलग रास्तों से विभिन्न करतब दिखाती हुई गेंदें वापस अपनी जगह पर पहुँच जाती हैं।

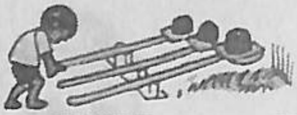
यहीं एक और मज़ेदार चीज़ देखी। एक काँच के बड़े जार में पानी भरा है और पानी पर एक गेंद तैर रही है प्लास्टिक की। नीचे लगा बटन दबाया तो पानी गोल-गोल घूमने लगा। और घूमते घूमते बीच में भँवर बनने लगा। फिर धीरे-धीरे वह भँवर गेंद को अपने साथ नीचे की तरफ खींचता जाता है। तुमने सुना होगा, शायद देखा भी हो नदी-तालाब में बनने वाले भँवर में लोग फँसकर डूब जाते हैं। कैसे बनता है यह भँवर, यही दिखाया गया है यहाँ। यह तुम ख़ुद घर पर करके भी देख सकते हो। किसी बड़े से भगोने (या बाल्टी) में भरे पानी को एक डण्डी से गोल-गोल घुमाना शुरू करो तो थोड़ी देर में भगोने के बीच में, पानी में गड्ढा-सा दिखाई देगा। करके देखो।

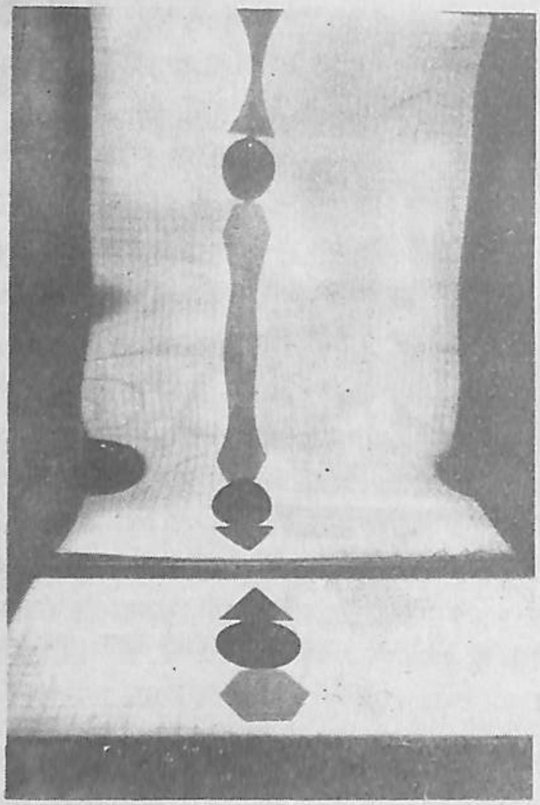
उसके बाद हम गए आविष्कार दीर्घा में। इसमें कई ऐसी खोजें जो आज जीवन में कई तरह से उपयोगी सिद्ध हुई हैं प्रदर्शित की गई हैं। जैसे रेल का भाप इंजन। यहाँ रेल के पहियों को चलता हुआ देखा। इसी कमरे में विभिन्न आविष्कारों की कहानी पढ़ी व देखी जा सकती है।

ऊपर ही एक ओर जीव विज्ञान से जुड़ी कुछ चीज़ें देखी जा सकती हैं। यहाँ कछुआ, केकड़ा, रंगीन मछली, खरगोश, सफ़ेद चूहे आदि पालतू जानवर नज़दीक से अवलोकन के लिए रखे गए हैं। मुर्गी और बत्तख के अण्डे उचित तापमान पर रखे जाते हैं जिससे अण्डों से चूज़े निकलने की प्रक्रिया क्रमशः देखी जा सकती है।

एक मज़ेदार खिलौना और देखा। एक साइकिल स्टैंड पर खड़ी है। इस पर बैठकर पैडिल चलाने पर साइकिल के पहिए घूमते हैं। इसमें तो कुछ नया नहीं था पर जब हम खिलौने के सामने खड़े होकर दूसरे को साइकिल चलाते देखते हैं तो साथ के बॉक्स में रखा कंकाल भी साइकिल चलाता हुआ दिखता है। इसे देखकर पैरों की हड्डियों के जोड़ों की चाल समझ में आती है।

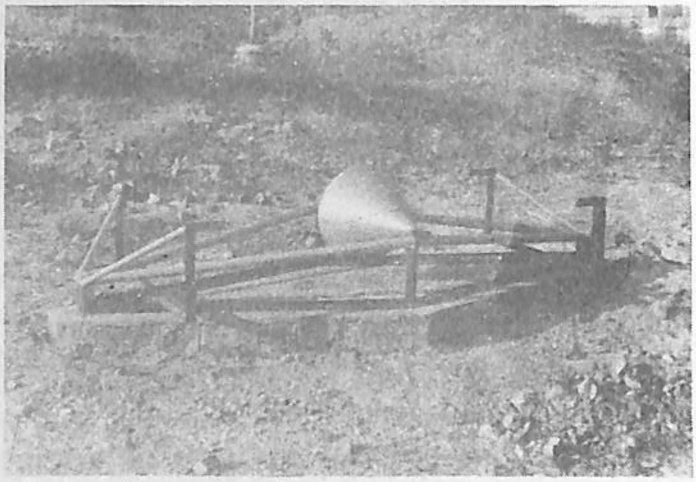
तभी वहाँ तैनात सुरक्षा गार्ड अपनी सीटी





लम्बवत प्रतिबिम्ब

फिर धीरे-धीरे हमें लगने लगा कि हम तारों भरे आसमान के नीचे बैठे हैं। तारों का चलना, उनकी पहचान, राशियों का आकार पहचानना आदि जानकारियाँ हमें दी गईं। तारामण्डल देखना एक अनूठा अनुभव है। इस तारामण्डल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे कहीं भी ले जाया जा सकता है। विज्ञान केन्द्र द्वारा इसे, बाहर ले जाकर बच्चों को तारे दिखाने के लिए उपयोग किया जाता है।



विज्ञान केन्द्र के सौजन्य से

शंकू ऊपर की तरफ दौड़ता है।

ज़ोर-ज़ोर से बजाने लगा। जब उसकी तरफ देखा तो बोला तारामण्डल शो शुरू हो रहा है। इधर-उधर देखा, तारामण्डल जैसा तो दिखाई नहीं दिया। एक चौकोर-सी खुली जगह में तारामण्डल देखने वालों को इकट्ठा किया गया। वहाँ रखे एक बड़े-से गुब्बारे में हवा भरना शुरू हुई। लगभग 6 मीटर ऊँचाई और इतने ही व्यास की गुम्बदाकार गुफा तैयार हो गई। साथ में अन्दर जाने का रास्ता भी बन गया। जूते-चप्पल बाहर उतारकर गुफा में पहुँचे। अन्दर कोई तीस लोगों के बैठने की जगह थी। बीच में रखी एक मशीन से थोड़ी-थोड़ी रोशनी निकल रही थी। थोड़ी देर में वहाँ बिल्कुल अन्धेरा हो गया। और

इस तरह विज्ञान केन्द्र में काफ़ी वक़्त बीत गया। शाम होने लगी। इमारत के बाहर एक दूरबीन के द्वारा उस वक़्त भोपाल के आसमान पर दिखने वाले तारों को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता था। हमने उस वक़्त दिखाए जा रहे शनि महाराज के दर्शन किए और ख़त्म की विज्ञान की दावत। ●

आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल के शिक्षा सहायक, श्री विलास चौधरी तथा निदेशक श्री डी. पाल द्वारा उपलब्ध सामग्री पर आधारित। दो छायाचित्र विज्ञान केन्द्र के सौजन्य से। शेष छायाचित्रों के छायाकार आनंद धवनकर।

विज्ञान केन्द्र में प्रवेश टिकिट दो रुपए है तारामण्डल का एक रुपया अलग से लगता है। यहाँ विज्ञान के खिलौनों के अलावा और भी कई तरह की गतिविधियाँ हैं। गाँवों में विज्ञान की चल प्रदर्शनी ले जाना, समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करना, विज्ञान विषयों पर व्याख्यान करवाना आदि। यहाँ रखे गए खरगोश, बच्चों को घर ले जाने को दिए जाते हैं जिससे वे उनका और ज़्यादा अध्ययन व अवलोकन कर सकें।

इस केन्द्र द्वारा म.प्र. में विभिन्न जगहों पर विज्ञान विषय के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी किए जाते हैं। उसके बाद जो शिक्षक अपने स्कूल के बच्चों के लिए विज्ञान केन्द्र बनाना चाहते हैं उन्हें एक किट दी जाती है। म.प्र. में ऐसे 65 केन्द्र बनाए गए हैं।

कार्ड

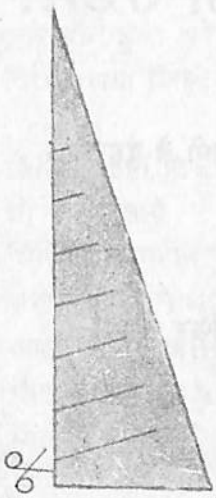
कार्ड बनाने और उसे सजाने की कुछ डिज़ाइनें पिछले अंक में देखीं। अब इस बार कुछ और डिज़ाइन बनाओ।

पहले तो कार्ड बना लो अपनी इच्छानुसार जितना बड़ा और जैसा चाहो। अब कार्ड को ऊपर से या अन्दर सजाने के लिए डिज़ाइन बनाने के लिए तैयार हो जाओ।

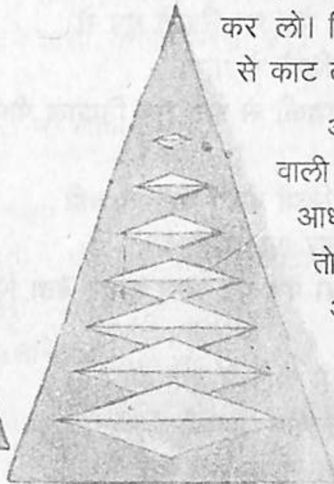
8 से.मी. चौड़ी और 12 से.मी. लम्बी कागज़ की एक पट्टी ले लो। काग़ज़ की पट्टी को इसी अनुपात में बड़ा या छोटा भी कर सकते हों।



चित्र-1



चित्र-2

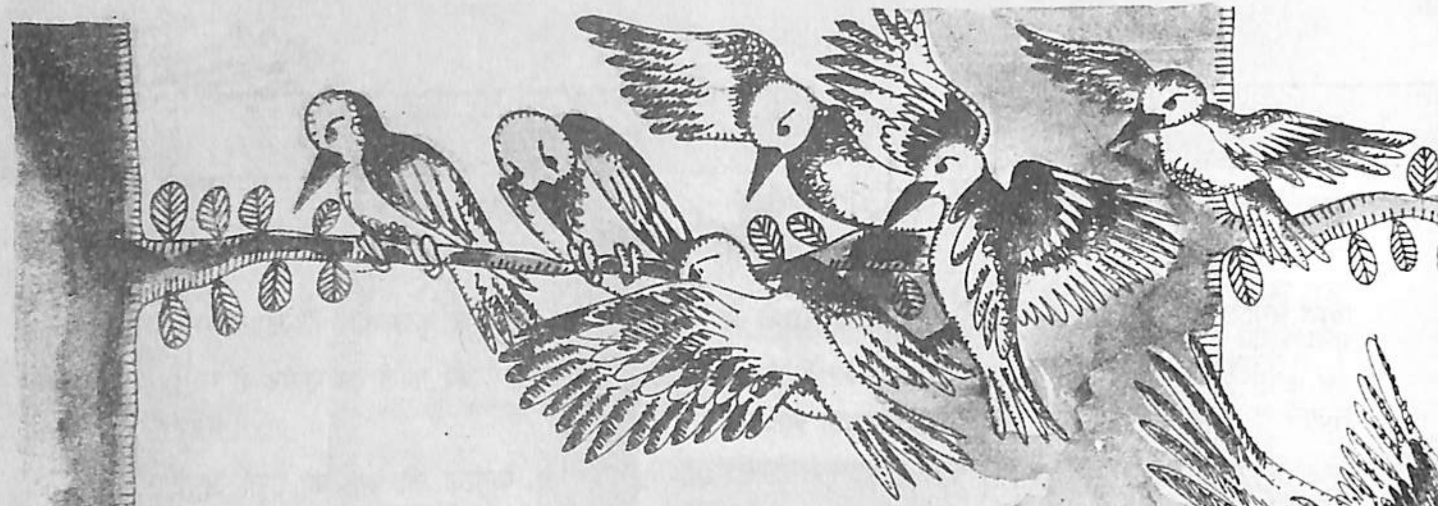


इस पट्टी को लम्बाई में बीच से मोड़कर दोहरा कर लो। फिर इस दोहरी पट्टी को कर्ण रेखा पर से काट लो। चित्र-1 के अनुसार।

अब तुम्हारे पास एक जुड़े हुए किनारों वाली तिकोन पट्टी है और दो उसकी आधी-आधी पट्टियाँ हैं। आधी वाली पट्टियाँ तो एक तरफ रख दो। दोहरी पट्टी लो और चित्र-2 के अनुसार मुड़ी हुई किनार पर कट लगा लो। कट लगा लेने के बाद इस आकृति को खोलो। कटे हुए हिस्सों को मोड़ लो ऊपर की तरफ।

बस डिज़ाइन तैयार है अब इसे कार्ड के ऊपर या अन्दर चिपका दो।





उड़ो-उड़ो! उड़ो-उड़ो!!



हरे पेड़ पर खिली धूप में
चिड़ियों ने गाया
खिड़की से झट मुँह निकाल पीपी ने दुहराया।

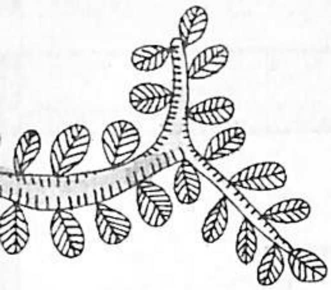
चिड़ियाँ बोलीं वहाँ से नहीं
बाहर आ जाओ
चढ़ो पेड़ पर साथ हमारे बैठो फिर गाओ।

पीपी बोले मैं क्यों आऊँ
तुम भीतर आओ
फैल जाओ सारे घर में
फिर सारे दिन गाओ।

चिड़ियाँ बोलीं घर छोटा है
घर में कामकाज होता है
पीपी बोले क्या होता है
तुम तो आ जाओ।

चिड़ियाँ बोलीं पेड़ नहीं आकाश नहीं घर में
फूल-पत्तियाँ दूर-दूरियाँ घास नहीं घर में
चलो साथ में उड़ें दूर तक
ऊपर-ऊपर तक
ले जाएँगी तुम्हें आज हम
तारों के घर तक।
पीपी बोले
उड़ मैं कैसे पाऊँगा!
उड़ जाओगी मैं नीचे रह जाऊँगा!!







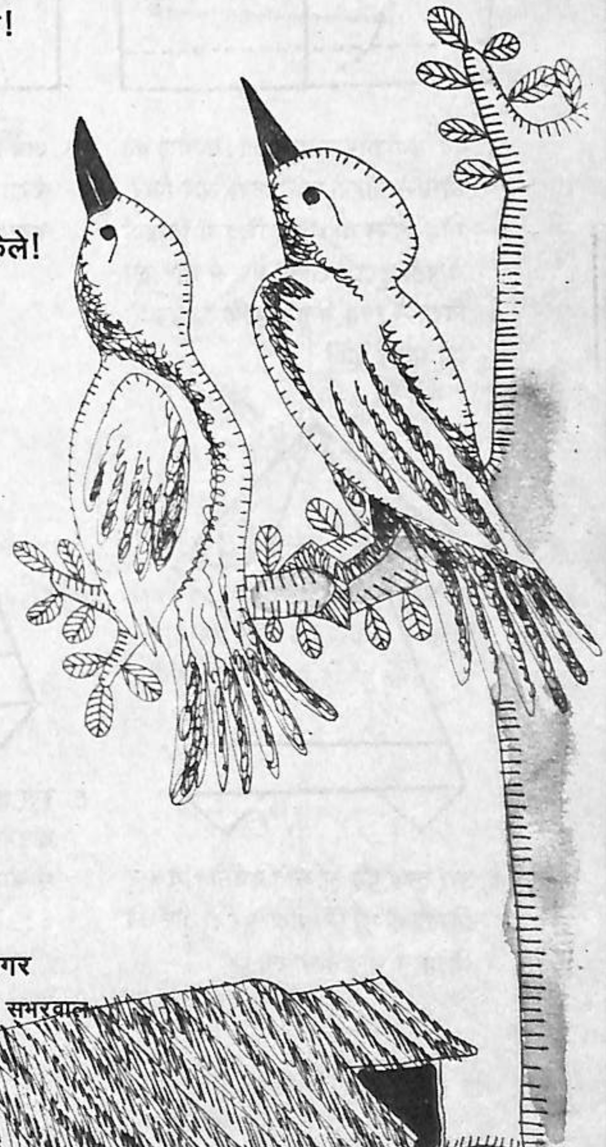
बोली सोन चिरैया
भैया आओ तो
उड़ लोगे तो उड़ के ज़रा दिखाओ तो।

पीपी आख़िर चढ़े पेड़ पर
चिड़िया चहकानी उड़ो! डरे पीपी
लेकिन वे बिल्कुल न मानीं।
देकर अपने पंख उधार
गाकर बोली बारम्बार: उड़ो-उड़ो! उड़ो-उड़ो!!



आख़िर हिम्मत करके पीपी उड़े
और क्या हुआ अरे! उड़ गए बहुत ऊपर
दिखने लगा खिलौने जैसा उनको धरती पर!

चिड़ियाँ कहीं दिखीं ना लेकिन
तो वे चिल्लाये
चिड़ियों के महीन स्वर
उनके कानों में आए : जाओ पीपीलाल अकेले!
जाओ पीपीलाल!!
पंख हमारे उड़ो पसारे
प्यारे पीपीलाल!!



वापस लाना पंख हमारे
परियाँ देंगी तुम्हें तुम्हारे लिए बने परसाल!

बन्दनवार जगत के द्वार
सात आसमानों के पार
जगह-जगह तारों के मेले
जाओ पीपीलाल अकेले
जाओ पीपीलाल!!!

सुनकर हाथ हिलाया पीपीजी ने मस्ती में
उड़ते चले गए हँसते तारों की बस्ती में

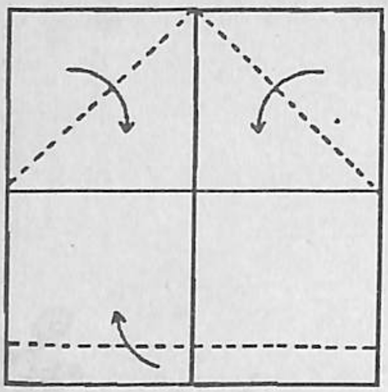
❑ नवीन सागर

चित्र : सबीना सभरवाल

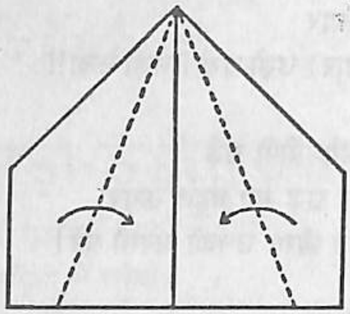


खेल कागज़ का

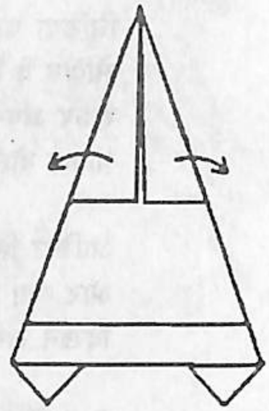
गुड्डा



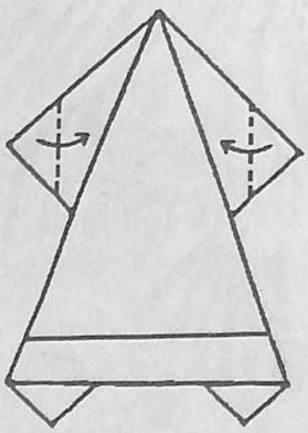
1. एक वर्गाकार कागज़ लो। कागज़ को बीच से चौहरी घड़ी करो और फिर मोड़ खोल दो। फिर चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। फिर आकृति को पलट लो।



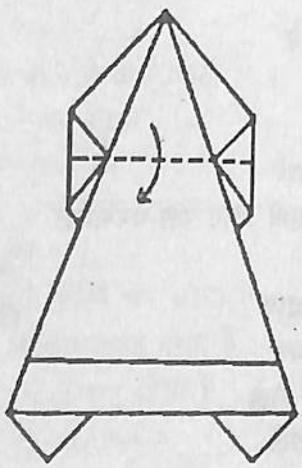
2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। फिर आकृति को पलट लो।



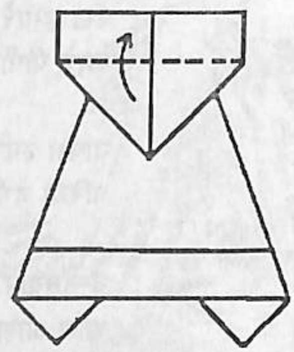
3. आकृति में ऊपर की ओर दिखाई दे रही ऊपरी परतों को तीर की दिशा में खोल लो।



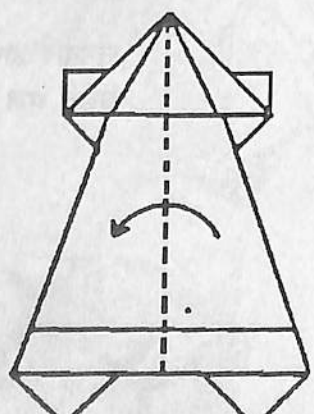
4. इस तरह की आकृति बनेगी। चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



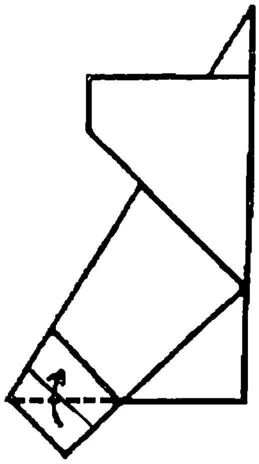
5. इस तरह। अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।



6. अब फिर आकृति के ऊपरी सिरे पर दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

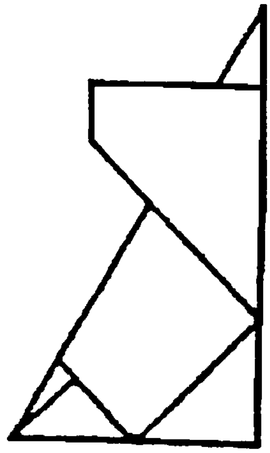


7. इस तरह की आकृति बन गई? अब चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

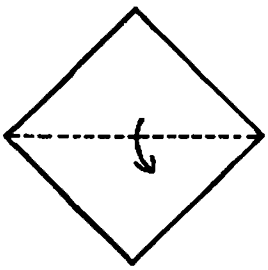


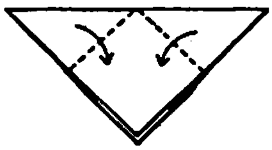
8. इस तरह। इस आकृति में नीचे की ओर निकले कोनों पर दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। इसी तरह का मोड़ आकृति को पलटकर भी बना लो।

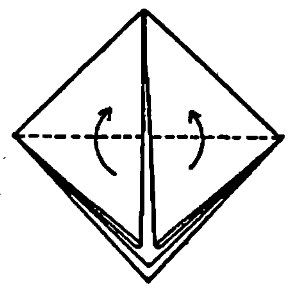
9. यह गुड्डे का धड़ तैयार हो गया।



गुड्डे का सिर



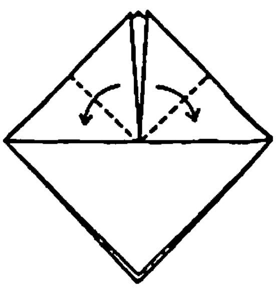


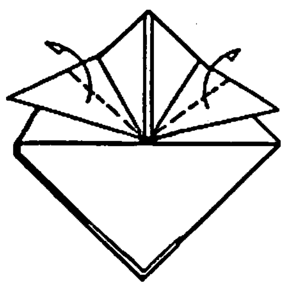


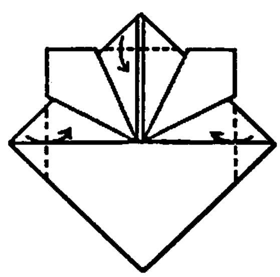
1. एक दूसरा वर्गाकार काग़ज़ लो। उसे चित्र में दिखाई टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

2. इस तरह। अब इस आकृति में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

3. यहाँ से चित्र थोड़े बड़े करके दिखाए गए हैं। चित्र –2 में जिन कोनों को मोड़ा था उन्हीं को बीच से मोड़ते हुए तीर की दिशा में ले जाओ।



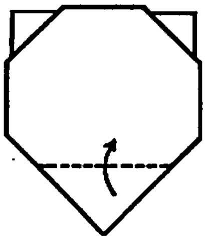




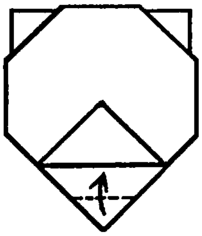
4. इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ो। आकृति की ऊपरी परतों को ही मोड़ना।

5. इस तरह की आकृति बनेगी। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाकर वापस खोल लो। फिर इन किनारों को खोलते हुए इस मोड़ के निशान से चपटा कर लो।

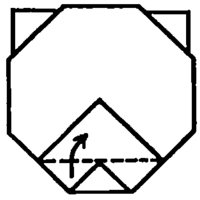
6. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। तीनों मोड़ बन जाएँ तो आकृति को पलट लो।



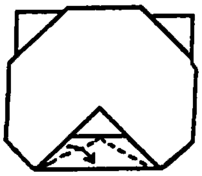
7. जब इस तरह की आकृति बन जाए तब आकृति में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में ऊपरी परत को मोड़ लो।



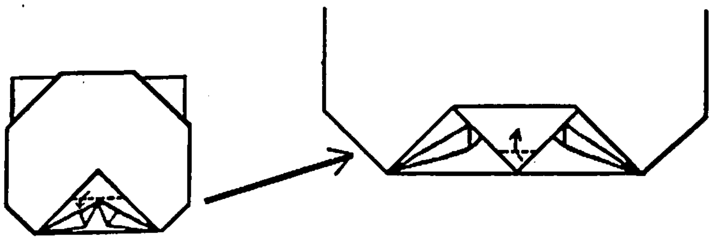
8. अब निचली परत पर दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



9. एक बार फिर निचले सिरे को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।

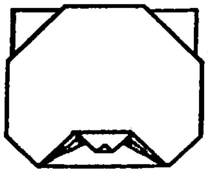


10. अब उसी सिरे को एक बार और टूटी रेखाओं पर से मोड़ो। ध्यान रहे सिर्फ़ ऊपरी परत को ही मोड़ना है।

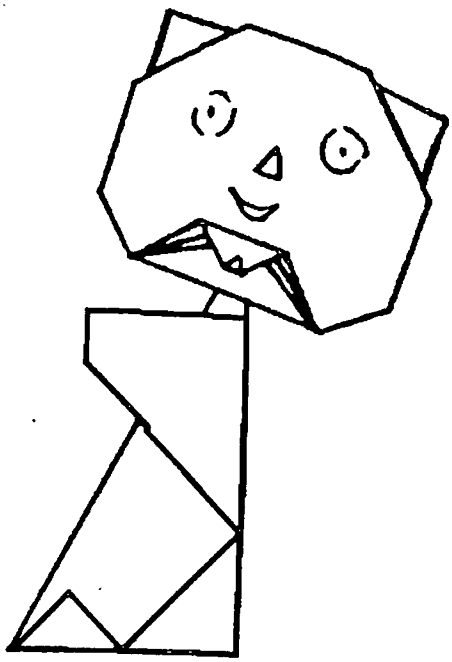


11. इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। आगे वाले चित्र में आकृति का निचला हिस्सा बड़ा करके दिखाया गया है।

12. अपने बनाए हुए खिलौने को इस आकृति से मिलाओ। फिर टूटी रेखा पर से इस कोने को तीर की दिशा में मोड़ लो।



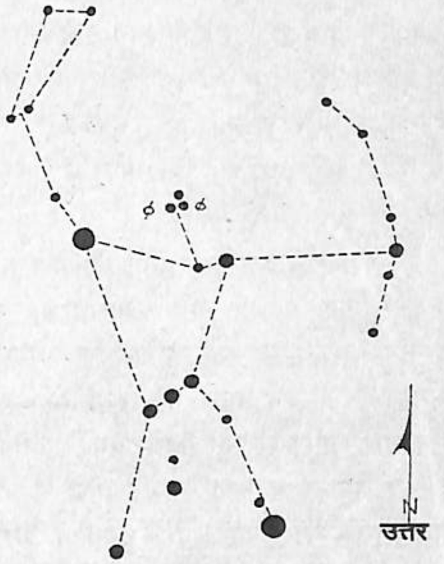
13. गुड्डे का सिर तैयार है। सिर के इस हिस्से में आँख नाक मुँह बना लो। इसके पहले जो हिस्सा बनाया था उस के साथ इसे जोड़ो।



14. ऐसा गुड्डा तैयार हुआ या नहीं? न हुआ हो तो फिर कोशिश करना।

एक थाल मोतियों से भरा

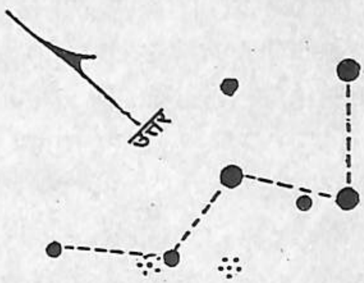
❑ टुलटुल विश्वास



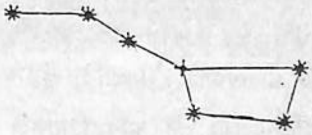
जनवरी-फ़रवरी के महीने में अक़्सर ओस गिरती है। आसमान हल्के बादलों और कुहरे की चपेट में आ जाता है। तारों की बात तो दूर, चाँद तक लुकाछिपी खेलने लगता है। और जब कोहरे वाला यह समय बीत जाए तो फिर वक़्त आ जाता है तारे निहारने वालों की मौज का। अभी से लेकर बारिश के आने तक हम ख़ूब तारे देख सकते हैं।

तुमने भी कभी न कभी निहारे ही होंगे तारे। शायद कभी नानी-दादी से तारों की कहानियाँ भी सुनी हों। चलो कुछ तारा समूह पहचानने की कोशिश करते हैं। क्या तुम इस पेज पर बने तारा समूहों के नाम जानते हो? नहीं जानते हो तो पूछकर पता लगाओ।

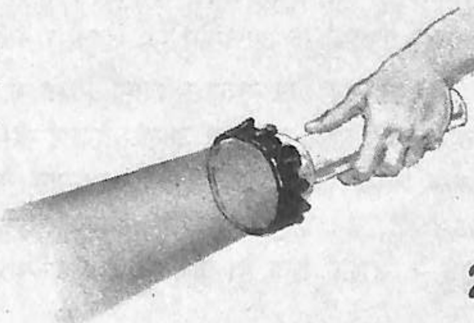
आसमान में तारे देखने के लिए किसी छोटी जगह या गाँव या शहर से दूर की कोई जगह ही ठीक रहती है। भोपाल जैसे शहर से ख़ाली आँखों से तारे देखने में कोई ख़ास मज़ा नहीं क्योंकि यहाँ की सड़कों की तेज़ बत्तियों की फैलती रोशनी आड़े आती है। पर ऐसा नहीं कि शहरों से तारे देखने का मज़ा बिल्कुल ही नहीं लिया जा सकता। हाँ, यह ज़रूर है कि शहर से कहीं दूर निकल जाओ या किसी गाँव में चले जाओ तो तारे ज़्यादा उज्ज्वल दिखते हैं। और तारा समूह या नक्षत्र ज़्यादा आसानी से पहचाने जा सकते हैं।



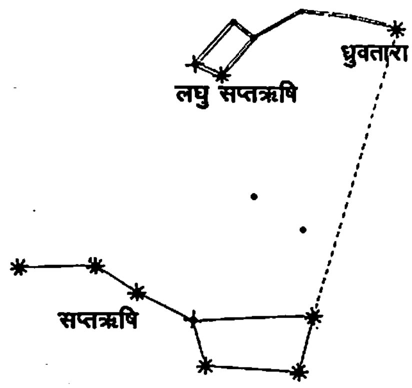
एक और बात का ध्यान रखना होता है तारे देखने के लिए। वह यह कि अमावस्या या उसके आसपास के दिनों में ही ये ज़्यादा आसानी से दिखते हैं। यह इसलिए कि जब आसमान में पूरा दमकता हुआ चाँद हो तो उसकी चाँदनी में दूर के छोटे-छोटे तारों की रोशनी धुँधली पड़ जाती है और हमें आसानी से दिखाई नहीं देती। कुछ और बातें भी हैं ध्यान रखने की। जैसे रात को तारे देखने निकलो तो ठण्ड से बचने की पूरी तैयारी से जाना और अकेले मत निकलना। दो-तीन दोस्त मिलकर जाओ, और एकाध कोई बड़ा व्यक्ति साथ हो तो घरवालों को भी फ़िक्र नहीं होगी।



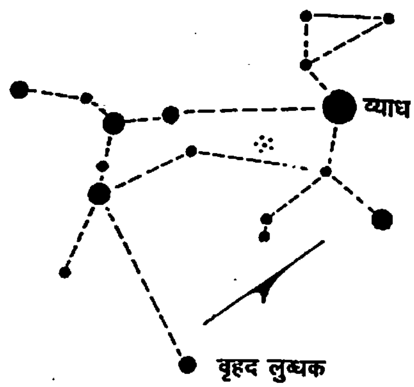
जो कुछ तुम रात के आकाश में देखते हो वह किसी कॉपी में लिखते जाना। तारा-समूहों के चित्र भी बना सकते हो। अपने अवलोकन लिखते या चित्र बनाते समय तारीख़, समय और अपनी स्थिति (कहाँ बैठकर तुमने आसपास का वह नज़ारा देखा) भी ज़रूर लिखते जाना। रात को अंधेरे में तुम्हें अपनी कॉपी देखने के लिए टॉर्च की ज़रूरत होगी। पर टॉर्च की पीली रोशनी हमारी आँखों को चुँधिया देती है। इससे बचने के लिए टॉर्च के काँच के ऊपर एक लाल पारदर्शी काग़ज़ रबर बैण्ड की मदद से चढ़ा लो। लाल रोशनी अंधेरे से अभ्यस्त हमारी आँखों को परेशान नहीं करती है।



तुमने थोड़ी देर पहले नामों से तो कुछ तारा-समूहों और नक्षत्रों को पहचाना। पर जब तक यह पता न हो कि ये समूह आसमान में कहाँ होंगे तब तक अनगिनत तारों के बीच इन्हें ढूँढ निकालना काफ़ी मुश्किल होता है। इसलिए अगले पेज पर हम आसमान का एक नक्शा दे रहे हैं। इसे अपने सिर के ऊपर ऐसे पकड़ो कि तुम्हें ऊपर देखने पर नक्शा दिखता रहे। फिर इसके उत्तर-दक्षिण भौगोलिक उत्तर-दक्षिण से मिला लो। तब तुम्हें आसमान में तारे लगभग उसी स्थिति में दिखाई देंगे जैसे इस नक्शे पर।

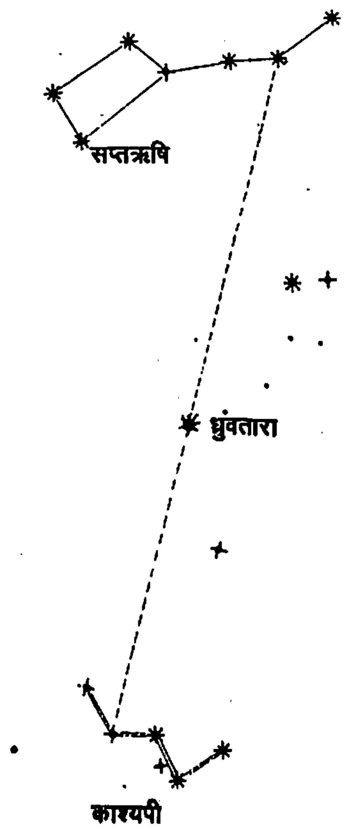


बस इतना अन्तर होगा कि इस नक्शे के बीच में स्थित ध्रुव तारे के उस पार के तारे तुम्हें अभी दिखाई नहीं देंगे। ध्रुव तारे को ढूँढने के दो-तीन तरीक़े हैं। एक तो यह कि लगातार चार-पाँच दिन तक एक ही जगह पर बैठकर तारों की स्थितियाँ देखी जाएँ। तुम पाओगे कि बाक़ी सब तारे, तारा-समूह, नक्षत्र अपनी जगह से थोड़ा-थोड़ा खिसकते जाते हैं। पर उत्तरी आकाश में एक तारा है जो स्थिर रहता है, अपनी जगह से हिलता-डुलता नहीं। वही ध्रुवतारा है। इसे ढूँढने का दूसरा तरीक़ा है सप्तऋषि को ढूँढ निकालना। फिर सप्तऋषि के पहले दो तारों को जोड़ते हुए एक सीधी काल्पनिक लकीर उत्तर दिशा में खींचना। उत्तरी दिशा का जो उज्ज्वल तारा इस लकीर पर आता है वही ध्रुवतारा है। तीसरा तरीक़ा है लघु सप्तऋषि या ध्रुवमत्स्य नामक तारा समूह को ढूँढ निकालना। इस समूह की पूँछ की ओर का आख़िरी तारा ही ध्रुवतारा है। पर यह तरीक़ा बहुत विश्वसनीय नहीं है क्योंकि लघु सप्तऋषि के तारे हमेशा बहुत स्पष्ट दिखाई नहीं देते हैं।



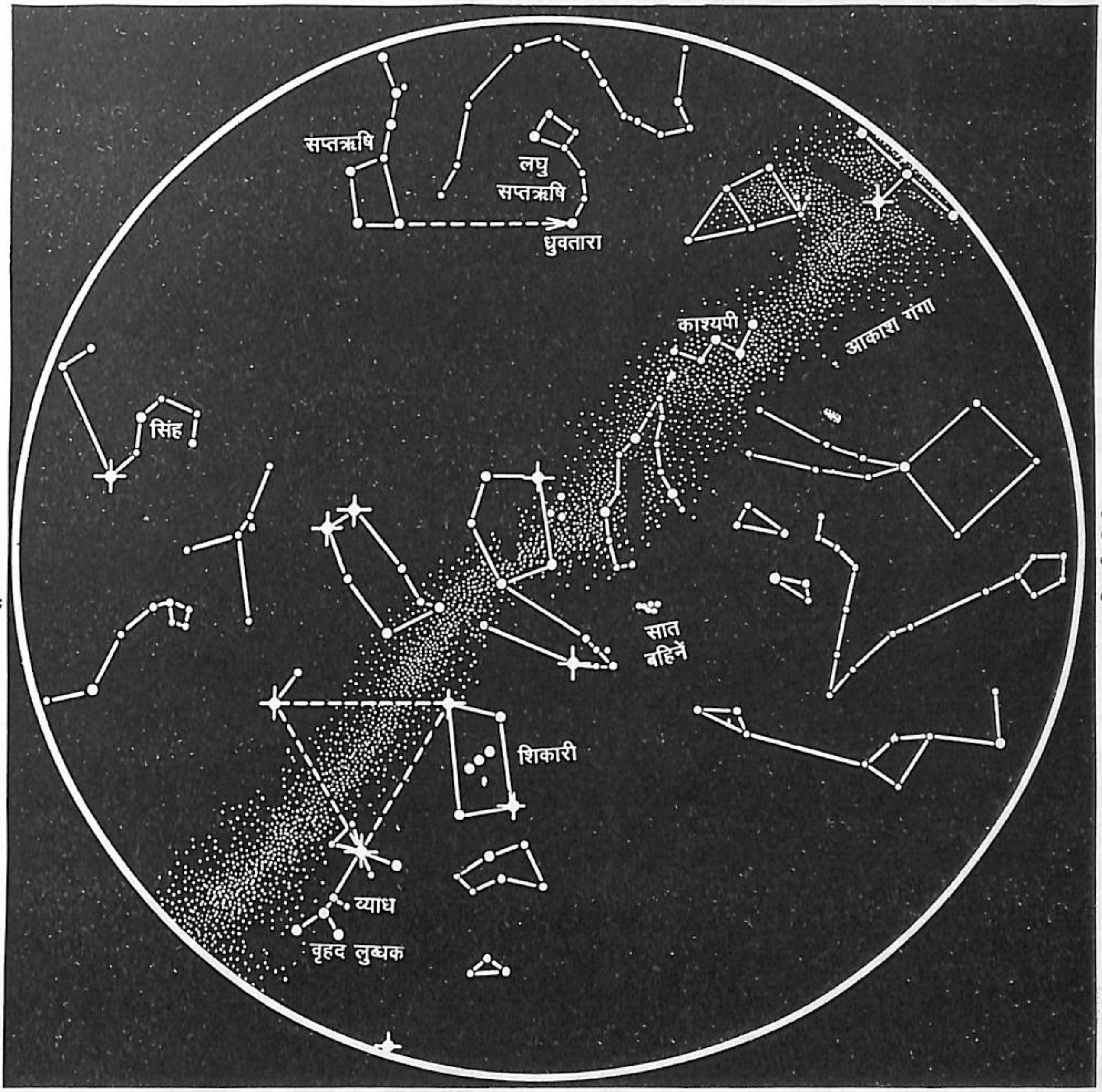
ख़ैर, एक बार ध्रुवतारा ढूँढ लो तो बात आगे बढ़ाई जा सकती है। फ़रवरी-मार्च के महीनों में सप्तऋषि उत्तर आकाश पर, थोड़ा पूर्व की ओर दिखाई देता है। इसके दक्षिण में सिंह नक्षत्र दिखाई देगा। शिकारी तारा समूह इस समय बीच आसमान में पश्चिम की ओर दिखेगा इसके दो तारे बहुत चमकदार होते हैं। एक शिकारी का दाहिने कन्धे वाला और दूसरा उसके बाएँ पैर पर बसा। इस समूह में कुल मिलाकर जितने तारे हैं, वे सब हमें दिखाई नहीं देते। पर उसका चित्र तो तुम यहाँ देख ही सकते हो। ताकि ढूँढने की कोशिश कर सको।

दक्षिण पूर्व की ओर शिकारी का कुत्ता (वृहद लुब्धक) दिखता है। इस समूह के चार पाँच स्पष्ट दिखाई देते हैं और आसानी से ढूँढे जा सकते हैं। इसमें से सबसे चमकीला तारा व्याध कहलाता है और यह उत्तरी गोलार्ध के आसमान का सबसे चमकीला तारा है।



शिकारी की उत्तर-पश्चिमी दिशा में तुम्हें शायद बहुत छोटा-सा, छोटे-छोटे तारों का एक झुण्ड दिखाई दे। ये सात बहिनें कहलाती हैं। और बिच्छु शायद दिख जाए आसमान के एकदम पश्चिमी छोर पर। काश्यपी नाम का तारा समूह आजकल ध्रुवतारा या लघु सप्तऋषि के पूर्व में दिखाई देता है। काश्यपी (या शर्मिष्ठा) को ढूँढ निकालने के लिए

उत्तरी क्षितिज



दक्षिणी क्षितिज

पूर्वी क्षितिज

पश्चिमी क्षितिज

हम सप्तऋषि और ध्रुवतारे की मदद ले सकते हैं। सप्तऋषि की पूँछ की ओर से दूसरे तारे से ध्रुवतारे को जोड़ते हुए एक सीधी रेखा खींचो तो वह ध्रुवतारे से आगे चलकर ठीक काश्यपी तारा समूह तक जाती है। काश्यपी का आकार तुमने पहले पेज पर देखा है। अंग्रेज़ी के अक्षर W या M की तरह दिखता है यह। सप्तऋषि और काश्यपी में यह रिश्ता है कि जब एक आसमान के बीच के हिस्से में दिखता है तो दूसरा क्षितिज के आसपास के निचले आकाश में दिखेगा, क्योंकि ये दोनों ही तारा-समूह ध्रुवतारे की धुरी पर घूमते रहते हैं।

जब काश्यपी तारा समूह मिल जाए तो यह देखने की कोशिश करो कि क्या कोई धुँधली-सी पट्टी आसमान में उत्तर-पश्चिमी दिशा से दक्षिण-पूर्व दिशा तक फैली हुई दिखती है? काश्यपी इसी में बसा होगा। यह हमारी आकाश गंगा है। इसके अनगिनत तारे धुँधली-सी सफ़ेद पट्टी की तरह आसमान में फैले दिखते हैं। इन दिनों रात के दस बजे के बाद

पूर्वी आकाश में मंगल ग्रह भी दिखते हैं। तुम इसे इसकी लाल रोशनी से पहचान सकते हो। इसी तरह सुबह के चार-पाँच बजे के आसपास उत्तर-पूर्वी आकाश में एक पुच्छल तारा दिखता है। इसे इसकी पूँछ से पहचानो।


सिंह

इन समूहों को आसमान में ढूँढते हुए शायद तुम्हें यह लगे कि सिंह नाम का समूह तो कहीं से भी शेर जैसा नहीं दिखता। फिर इसका नाम सिंह क्यों पड़ा? ऐसा ही बिच्छु आदि नक्षत्रों के साथ भी है। यह नाम हमारे पूर्वजों के रखे हुए हैं। सदियों से लोग तारों की चाल, चाँद की चाल आदि का अध्ययन करते रहे हैं। शायद बहुत चमकीले तारों को अपनी कल्पना की बुनावट में बुनकर हमारे पूर्वजों को आसमान में शेर, बिच्छु, शिकारी आदि दिखते होंगे। इसी से इनके ये नाम पड़ गए।


बिच्छु

तुम इनमें से कितनों को आसमान में ढूँढ पाए? हमें ज़रूर लिखना। और अब एक छोटा-सा सवाल। एक तारा है ख़ूब चमकदार और बड़ा-सा। साल भर में हमें लगभग रोज़ ही दिखाई देता हैं। सिवाय तब जब घने बादल छाये हों। क्या तुम उस तारे का नाम बता सकते हो? ●

इस लेख में आए चित्र भारतीय मौसम विभाग की खगोलीय पत्रिका, आइविटनेस एक्सप्लोरर्स सीरीज़ की नाइट स्काइ व डब्ल्यू.एच. फ्रीमैन एण्ड कम्पनी की यूनिवर्स से साभार लिए गए हैं।

माथापच्ची : हल फ़रवरी, 97 अंक के

1. नीचे का, तीर के निशान वाला गीयर घूमेगा ही नहीं।
2. गरम चाय उड़ेलने से पहले चीनी मिट्टी के कप में चम्मच इसलिए रखा जाता है ताकि चाय की गर्मी चम्मच में से प्रवाहित हो जाए। और अचानक गर्म होने से कप के चटक जाने का डर न रहे। इसी वजह से पतली दीवार वाले कप ज़्यादा टिकाऊ होते हैं।
3. (1) भारत (2) कनाडा (3) नेपाल (4) रूस (5) चीन
4. जाहिर है सबसे पहले दियासलाई की तीली ही जलाओगे।
5. मैं उस लड़की से 1 जनवरी 1997 को मिली। तब वह ग्यारह साल की थी।
7. पहली स्थिति की तुलना में दूसरी स्थिति में पानी का तल थोड़ा ऊपर चढ़ेगा।
8. 19

वर्ग पहेली – 66 का हल

1 क	ह	2 ना			3 य	था	व	4 त
था		पि		5 इ	ति			मा
का		त	6 रा	ना		7 मा	कू	ल
8 र	9 ग			ना		हि		
	10 म	11 ना	ही		12 वि	र	13 ह	
		सू		14 का			15 रा	16 ल
17 क	गा	र		18 य	हू	19 दी		ह
या			खु	20 र		दा		रा
21 म	क	स	द			22 र	स	ना

वर्ग पहेली – 66 के सही हल भेजने वाले पाठक हैं नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल। शिवकुमार अंगारे, माहुद; ए. आर. गजेन्द्र एवं किरण, देवरबीजा; लालसिंह धनकर, रजोली, सोमनाथ भट्टाचार्य, तितुरजीह, सभी दुर्ग। महेन्द्र शुक्ला, बिर्रा, बिलासपुर। गोकुल प्रसाद जांगड़े, अंबिकापुर, सरगुजा। मोहन राकेश पटेल, केंदुवा; वरुण शर्मा, गिधपुरी; अंशु प्रभाष वर्मा, देवरी, सभी रायपुर। ऋषिका साही, भोपाल। संजय चौधरी, बुरहानपुर; नाहिद खान, नर्मदानगर, दोनों खण्डवा। ओ.पी. सोनसारवाँ, अनुपम पटेल, डोंगरगाँव, दोनों राजनांदगाँव। राजेश दुबे, पोड़ी, जबलपुर। कुलदीप नागर, जावी, मन्दसौर। हुकुमचन्द विश्वकर्मा, वीरसिंह राजपूत, दोनों रायसेन। रविकान्त मित्तल, ब्यावरा। मुक्ति नायक, बिजावर, छतरपुर। सभी मध्य प्रदेश। दीपिका खण्डेलवाल, मदनगंज, अजमेर। आईदान सिंह चौहान, ओसियाँ, जोधपुर। दोनों राजस्थान। इन्हें तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।

कहानी

बस की सैर

❑ वल्लिकानन

नाम तो उसका था वल्लिमाँ पर उसको सब वल्ली ही कहते थे। उम्र उसकी केवल आठ वर्ष ही थी। उसके मन में सदा ही हर बात को जानने और समझने की इच्छा रहती थी। खेलकूद में उसका कोई साथी नहीं था। वह आमतौर से अकेली ही थी। काम उसे कुछ था नहीं। इसलिए दिन भर वह घर की दहलीज़ पर खड़ी रहती और देखती रहती कि सड़क पर क्या हो रहा है, कौन आ रहा है, कौन जा रहा है, आदि आदि।

चूँकि वह अकेली थी, दोस्त, सहेली कोई थी नहीं, खेल क्या खेले। अकेले में कोई खेल भी तो नहीं होता, बस घर की दहलीज़ पर ही खड़े रहो और जो कुछ भी बाहर हो रहा है, उसी का आनन्द लो - यही काम था उसे। इसमें नए-नए अनुभव मिलते, नई-नई घटनाएँ देखती। कभी-कभी ये अनुभव और घटनाएँ अजीबोग़रीब हुआ करतीं।

एक बार एक विदेशी सिपाही उसकी गली से जा रहा था। जब वह उसके घर के नज़दीक आया, उसे वह बहुत अच्छा लगा। उसका सुन्दर रूपरंग, आकर्षक व्यक्तित्व, रोबीला चेहरा, सुन्दर कपड़े - हर तरह से देखने में वह अच्छा लग रहा था। उसके रोबीले चेहरे को देखकर कुछ बच्चे ही नहीं वरन् बड़े भी डर गए - क्योंकि - उसके आने पर सब अपने अपने घरों में घुस गए। लेकिन वल्ली, वह नहीं डरी। वह अपने दरवाज़े पर ही खड़ी रही। जब वह सिपाही नज़दीक आया, वल्ली ने अपने दोनों पैरों की एड़ियाँ मिलाकर खटाक से सैनिक अन्दाज़ में सैल्यूट किया।

सिपाही बहुत खुश हुआ, वह रुका। वल्ली की तरफ देखकर मुस्कराया और पास आकर उसने भी वल्ली को गुडमॉर्निंग कहा। वल्ली भी खुश हो गई। सिपाही अपने रास्ते पर चल दिया।

वल्ली की खुशी का ठिकाना नहीं था, उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। उसने आज एक रोबीले सिपाही से बात जो की थी। आस-पड़ोस में जाकर वह सबको बताने लगी। पड़ोस के सभी लोग उसकी चर्चा करने लगे। कोई कहता, "देखो, कितनी बहादुर लड़की है।" दूसरा कहता, "हाँ, एक अनजान सिपाही से आज इसने बात की।" जहाँ देखो, यही चर्चा। वल्ली को एकदम महसूस हुआ कि वह अब छोटी बच्ची नहीं रही। वह अब बड़ी हो गई है। सब उसकी तारीफ़ जो कर रहे थे।

वल्ली का घर गली में था। गली में भीड़-भाड़ नहीं रहती थी पर ऐसा भी नहीं कि बिल्कुल सुनसान ही रहता हो। वल्ली देखती कि पड़ोस वाले ताऊ जी बाज़ार जा रहे हैं। कभी देखती कि कोने के मकान वाले दादा जी कुछ ख़रीददारी करके धीरे-धीरे आ रहे हैं। कभी-कभी कोई अनजान व्यक्ति भी गली में निकल आता था। जब कभी कोई बैलगाड़ी उधर से गुज़रती तो उसके पहियों की चर्र चर्र-चूँ-चूँ की आवाज़ आती। बैलों के गले में बँधे घुंघरुओं की आवाज़ सुनाई पड़ती। कभी-कभी वल्ली देखती कि एक कुत्ता इधर से भागकर गली के दूसरी तरफ निकल गया। भागने से लगता कि वह किसी ज़रूरी काम से जा रहा है। उधर जाकर अचानक वह रुकता। इधर-उधर सूँघता, टाँग उठाता और गली के उस पार लगे पौधे पर पेशाब कर देता। इसके बाद वह फिर उसी तरह भागकर वापिस अपनी जगह लौटता, जैसे वह वहाँ कुछ भूली हुई चीज़ उठाने जा रहा हो। कभी-कभी गली में भिखारी भी दिखाई दे जाता था। फेरीवाले तो अक़्सर आते ही रहते थे। कहने का अर्थ यह कि गली में सदा कुछ न कुछ होता ही रहता था जिससे वल्ली का मन लगा रहता था।

वल्ली को सबसे अच्छा लगता था, आती-जाती बस को देखना। उसके गाँव से शहर तक आने-जाने के लिए केवल एक ही बस थी। यह बस हर एक

घंटे के बाद गली से निकलती - एक बार शहर जाते हुए और एक बार आते हुए। बस में हर बार नई सवारियाँ होतीं। आती-जाती बस को देखना वल्ली को बहुत अच्छा लगता।

बस को आते-जाते रोज़ देखते-देखते वल्ली के मन में भी धीरे-धीरे बस की सवारी करने की इच्छा उठी। वह सोचने लगी - बस में बैठकर देखना चाहिए -चाहे एक ही बार क्यों न हो। जब-जब वह बस को आते-जाते देखती, बस में बैठने की उसकी इच्छा और अधिक बढ़ती जाती। जब भी बस गली के कोने पर रुकती और उसमें से सवारियाँ उतरती-चढ़तीं, वल्ली उन्हें टुकर-टुकर देखती। सवारियों के चेहरे



उसके मन में आते रहते, उन्हीं के बारे में सोचती, हर समय बस का ख़्याल। उसमें चढ़ने की इच्छा। कभी-कभी गली का कोई उसका हमउम्र बस में चढ़कर शहर जाता। लौटकर आने पर जब वह शहर या बस के बारे में किसी को बताता तो वह मन ही मन जलभुन जाती। अन्दर ही अन्दर कह उठती, "घमण्डी कहीं का।" वैसे वल्ली को या उसके किसी साथी को घमण्डी शब्द का अर्थ ही मालूम नहीं था। पर इतना ज़रूर था कि यह शब्द अच्छे आदमी के लिए प्रयोग नहीं किया जाता।

दिन बीतते गए, कुछ महीने भी बीत गए। वल्ली सदा अपने उन पड़ोसियों से मिलने की कोशिश करती जो बस से शहर आते-जाते थे। उनसे अनेक तरह के सवाल पूछती। शहर के बारे में जानकारी हासिल करती। बस के बारे में पूछती। इस तरह उसे मालूम हो गया कि शहर उसके गाँव से छः मील दूर है। बस में एक तरफ का किराया तीस पैसे था। एक दिन वल्ली ने किसी से सुना कि किराया तो मामूली ही है - सिर्फ़ तीस ही पैसे। वल्ली को बड़ा अजीब सा लगा क्योंकि उसके लिए तीस पैसे कोई मामूली रक़म नहीं थी। उसने सोचा यदि वह पूरे महीने में भी तीस पैसे जोड़ ले तो उसके लिए यह बहुत बड़ी बात होगी। शहर तक जाने में बस को पैंतालीस मिनट का समय लगता था। उसने हिसाब लगाया - यदि बस में बैठकर शहर जाए और वहाँ उतरे नहीं तो उसी बस में बैठकर वापिस आ सकती है। तीस पैसे आने के और तीस जाने के - कुल साठ पैसे। अगर दोपहर में एक बजे की बस से जाए तो वह शहर पहुँचेगी पौने दो बजे और फिर लौटने के पैंतालीस मिनट - इस तरह ढाई बजे तक घर वापिस।

वह इसी तरह हिसाब लगाती रही। आने-जाने का समय, किराया जोड़ती रही। सोचती रही किस दिन चलूँ, कैसे क्या किया जाए? आख़िरकार वह दिन आ ही पहुँचा। एक दिन दोपहर को जब बस गाँव से शहर आ रही थी और गली से निकलकर सड़क पर मुड़ने ही वाली थी कि आवाज़ आई, "बस रोको, बस रोको"। ड्राईवर ने देखा कि एक छोटी सी बच्ची सड़क पर खड़ी अपने छोटे-छोटे हाथ हिला रही है।

बस की चाल धीमी हुई। कंडक्टर ने वल्ली को देखा और आश्चर्य से बोला, "अच्छा आज आप भी जा रही हैं।" कंडक्टर वल्ली को रोज़ दहलीज़ पर खड़े ही देखता था।

"हाँ, मुझे ज़रा शहर तक जाना है।" वल्ली ने उत्तर दिया, "मेरे पास पैसे हैं।" बाहर खड़े-खड़े ही उसने अपने पैसे भी दिखाए।

"ठीक है, ठीक है, पहले बस में चढ़ तो जाओ"। कहकर कंडक्टर ने वल्ली को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

"चिंता न करो, मैं ख़ुद चढ़ जाऊँगी, आप की मदद की कोई आवश्यकता नहीं।"

कंडक्टर ज़रा मज़ाकिया क़िस्म का आदमी था। हर समय हँसता-हँसता रहता। वह बोला, "अरे अरे! मेम साहब, नाराज़ नहीं होना। देखो, सबसे आगे सामने वाली सीट ख़ाली है। वहीं चले जाओ। अरे भाई रास्ता देना, सभी लोग एक तरफ को हो जाओ, मेम साहब आ रही हैं।"

दोपहर का समय था इसलिए बस में केवल छः-सात ही सवारियाँ थीं। वे सब वल्ली को देखने लगे। कंडक्टर की बात पर उनको हँसी भी आई। वल्ली थोड़ा शर्मा गई। बिना किसी की तरफ देखे वह सीधी जाकर सामने वाली सीट पर बैठ गई।

"मेम साहब चलें", हँसते हुए कंडक्टर फिर बोला। कहते ही उसने सीटी बजा दी और बस घर्र-घर्र करके चल दी।

बस बिल्कुल नई थी। उस पर नया-नया रोगन किया गया था। चमकदार सफ़ेद रोगन उसके चारों तरफ हरे रंग की पट्टियाँ। बस के अन्दर भी सफ़ेद चाँदी की तरह चमकते डंडे। जहाँ वल्ली बैठी थी - उसके सामने, ड्राईवर के शीशे के ऊपर, एक सुन्दर दीवार घड़ी लगी हुई थी। बैठने की सीटें भी काफ़ी आरामदायक और मुलायम थीं।

वल्ली बस के अन्दर की हर चीज़ को देख रही थी। पर जब उसने बाहर देखने बाईं तरफ खिड़की की तरफ सिर घुमाया तो उसे लगा कि वह कुछ भी नहीं देख सकती। खिड़की के शीशे के



नीचे-नीचे बस से बाहर की दुनिया में जो कुछ भी है, उसे तो वह बिल्कुल भी नहीं देख सकती। उसने एक उपाय ढूँढा - वह अपनी सीट पर खड़ी हो गई और शीशे से बाहर देखने लगी।

बस अब एक नहर के किनारे-किनारे जा रही थी। सड़क ज़्यादा चौड़ी नहीं थी। बाईं तरफ नहर, नहर के बाद दूर लम्बे-लम्बे ताड़ के पेड़, हरियाले मैदान, पहाड़ियाँ और अन्त में नीला आकाश। दाईं तरफ गहरी खाई सी थी - उसके बाद हरे-भरे लहलहाते खेत, जहाँ तक भी दिखाई पड़ता, यही सब था।

कितना अच्छा लग रहा था।

अचानक वल्ली को एक आवाज़ सुनाई दी। "सुनो, ऐ बच्ची बैठ जाओ, इस तरह सीट पर खड़े नहीं होते", वह चकराई। सीट पर बैठ गई और चारों तरफ देखा कि कौन बोला था। उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी है जो वास्तव में वल्ली को सीट पर खड़ा देखकर चिंतित हो गया था। लेकिन वल्ली को उसका बोलना अच्छा नहीं लगा।

"यहाँ कोई बच्ची-वच्ची नहीं है, मैंने भी औरों की तरह पूरे तीस पैसे दिए हैं और पूरा टिकट ख़रीदा है", वल्ली ने कहा।

कंडक्टर फिर बोला। उसने बूढ़े आदमी से कहा, "देखिए साहब, यह छोटी बच्ची नहीं है, ये तो मेम साहब हैं। आप क्या सोचते हैं, क्या कोई छोटी बच्ची पूरे तीस पैसे देगी और शहर तक अकेले सफ़र करेगी?"

वल्ली ने गुस्से में कंडक्टर की तरफ देखा और कहा, "मैं मेम साहब नहीं हूँ, याद है अभी तक तुमने मुझे टिकट भी नहीं दिया है।"

कंडक्टर ने वल्ली की नकल करते हुए जवाब दिया, "हाँ, हाँ, याद है" और हँस पड़ा। बस की सारी सवारियाँ भी कंडक्टर के साथ हँसी। वल्ली ने भी धीरे-धीरे उनके साथ हँसना शुरू किया।

कंडक्टर, वल्ली के पास आया, टिकट काटा और उसने वल्ली को दिया, "तुमने पूरी सीट का टिकट लिया है न, अब ज़रा आराम से अपनी सीट पर बैठ जाओ," वह बोला।

"क्योंकि मैं.... चाहती हूँ...." वल्ली ने कहा और फिर खड़ी हो गई।

"लेकिन तुम अगर इस तरह बार-बार खड़ी होओगी तो गिर जाओगी, और जब बस किसी मोड़ पर मुड़ेगी तो उस वक़्त तुम्हें चोट लग सकती है। इसलिए बेटी, मैं तुम्हें बैठने के लिए कहता हूँ।"

वल्ली ने नाराज़ होकर कहा, "मैंने कहा था न, मैं बच्ची नहीं हूँ - पूरे आठ वर्ष की हो गई हूँ।"

"अरे हाँ मैं तो भूल ही गया था - तुम तो आठ वर्ष की हो गई हो।"

बस रुकी, कुछ नई सवारियाँ चढ़ीं और कंडक्टर फिर कुछ समय के लिए व्यस्त हो गया। सवारियों के आने से वल्ली को डर हुआ कि कहीं

कोई उसकी सीट पर न आकर बैठ जाए। वह अपनी सीट पर बैठ गई।

इतने में ही एक बुढ़िया आई और वल्ली के साथ वाली सीट पर बैठ गई। जैसे ही बस चली, बुढ़िया ने उससे पूछा, "बेटी तुम क्या अकेली जा रही हो।"

वल्ली को बुढ़िया बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। उसके बड़े-बड़े कान, उनमें लम्बे-लम्बे छेद, उन छेदों में लटकते गोल-गोल बाले। बुढ़िया पान खा रही थी। वल्ली को सुपारी चबाने की आवाज़ और पान की खुशबू आ रही थी। बुढ़िया के होंठ भी पान की लाली से चमक रहे थे। वल्ली को लग रहा था कि उसके होंठों से पान की पीक अब गिरी, अब गिरी। "उँह, इस बुढ़िया से कौन बात करे"- उसने सोचा और बेरुखेपन से फिर कह दिया, "हाँ, मैं अकेली ही हूँ, मैंने अपना टिकट ले रखा है।"

"हाँ, माँजी, ये मेमसाहब आज शहर जा रही हैं। तीस पैसे का पूरा टिकट ले रखा है इन्होंने।" कंडक्टर अपनी जगह पर बैठा-बैठा बोला।

"तुम अपना काम करो," वल्ली ने कहा। कहकर वह हँस पड़ी और कंडक्टर भी हँसा। लेकिन बुढ़िया मुँह से पान की लार टपकाते हुए बोली, "ऐसी छोटी बच्ची का अकेले सफ़र करना ठीक नहीं। तुम्हें क्या मालूम है शहर में कहाँ जाना है, मुहल्ला, मकान नम्बर, गली वग़ैरह, कुछ तो मालूम होना चाहिए।"

"तुम मेरी चिंता मत करो, मुझे सब मालूम है।" कहकर वल्ली ने अपना मुँह खिड़की की तरफ कर लिया और बाहर देखने लगी।

वल्ली के जीवन का पहला बस सफ़र। कितनी सावधानी बरती थी उसने इसकी तैयारी में। पूरी स्कीम बनाने में ही उसे कितना परिश्रम करना पड़ा था। जो कुछ भी थोड़ा-बहुत जेब ख़र्च उसे मिलता था, सारा का सारा उसने जोड़ लिया था। मन में कभी पिपरमेंट गोलियाँ लेने की इच्छा होती, कभी गुब्बारे, कभी झुनझुना, कोई खिलौना - लेकिन उसने कुछ नहीं लिया। इस तरह उसने साठ पैसे जोड़ ही लिए थे। उस दिन गाँव में मेला भरा था। उसका कितना मन था झूला झूलने का, उसकी जेब में पैसे भी थे, पर उसने अपनी सारी इच्छाओं को दबाकर रखा, और पैसे बचाए।

जब उसके पास सफ़र के लायक पैसे हो गए, तो दूसरी परेशानी आई। माँ को बिना बताए घर से कैसे जाए। इसका भी उसने हल ढूँढ लिया। दोपहर में खाना खाकर माँ एक बजे से चार बजे तक सोती थी और यह समय था जब वह अक़्सर अपने घर की दहलीज़ पर खड़ी होती थी। कभी-कभी वह गाँव का एक-आध चक्कर भी लगाकर आ जाती थी। इसी समय का उपयोग वह आज बस के सफ़र के लिए कर रही थी।

बस चली जा रही थी। लम्बे-चौड़े मैदानों में से होकर, कहीं-कहीं रास्ते पर एक-आध छोटी-मोटी झोपड़ी नज़र आ जाती, कहीं कोई इक्का-दुक्का दुकान। कभी सामने से आती कोई बस या ट्रक आता हुआ दिखाई पड़ता। जब तक कि वह बस या ट्रक पास से बिल्कुल निकल नहीं जाता, ऐसा लगता जैसे कि बस के ऊपर ही चढ़ा जा रहा हो। कभी कहीं कोई पैदल यात्री सड़क के उस पार जाता दिखाई देता। ये सब कुछ देख-देखकर वल्ली खुश हो रही थी। चलती बस से देखने में लगता कि पेड़ एक लम्बी कतार बनाकर बस की तरफ भागे चले आ रहे हैं और जैसे ही बस उन पेड़ों के पास पहुँचती वे सब निराश होकर एक तरफ खड़े हो जाते थे। इसके बाद दिखाई पड़ता कि वे सब पीछे की तरफ भागे जा रहे हों।

अचानक वल्ली खुशी से नाच उठी। एक छोटी सी गाय अपनी पूँछ को हवा में ऊपर उठाए, सड़क के बीचों-बीच, बस के आगे, सीधी भागी जा रही थी। बस की रफ़्तार कुछ धीमी हुई। ड्राईवर ने ज़ोर-ज़ोर से हार्न बजाना शुरू किया लेकिन जितना ही वह हार्न बजाता, गाय उतना ही डर जाती और अधिक तेज़ी से भागती, सीधी बस के आगे ही आगे।

वल्ली खुश हो रही थी। वह गाय को भागते देख रही थी और खुशी से हँस रही थी। उसकी हँसी रुकने का नाम नहीं ले रही थी - यहाँ तक कि हँसते-हँसते उसकी आँखों में आँसू भी आ गए।

"ऐ, मेमसाहब, बहुत हँस चुकी हो, कुछ कल के लिए भी रखो।" कंडक्टर ने कहा।

आख़िरकार, गाय सड़क से हट गई। इसके बाद आया रेल का फाटक। बस रुक गई। दूर बहुत



दूर, एक रेलगाड़ी आती दिखाई दे रही थी। इतनी दूर कि जैसे एक छोटा सा काला-काला निशान हो। धीरे-धीरे वह साफ़ नज़र आने लगी और पास आते-आते एक पूरी गाड़ी दिखाई दी। उसकी गति और उसका शोर इतना अधिक था कि जैसे सारे वातावरण को ही उसने हिलाकर रख दिया हो। वल्ली को एकबारगी लगा कि उसकी बस भी हिल रही हो। गाड़ी के जाते ही फाटक खुला और बस चल पड़ी। इसके बाद आया एक बाज़ार - छोटा सा जिसमें थोड़ी भीड़-भाड़। बाज़ार में से होकर बस एक खुली बड़ी सड़क पर आ गई। वहाँ भी बाज़ार था, पर यह खुला-खुला, बड़ी-बड़ी दुकानें, उन पर सजा हुआ सामान। वल्ली यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गई। कितनी सजी सुन्दर चमकती दुकानें। इन पर लोग-बाग क्या ख़रीद रहे हैं वह तो जैसे अवाक रह गई।

इसके बाद आई वह जगह जहाँ बस को रुकना था। सभी सवारियाँ उतरीं, पर वल्ली, वह नहीं उतरी।

"ऐ मेमसाहब, तुम्हें उतरना नहीं", कंडक्टर ने कहा, "तीस पैसे में तुम यहीं तक आ सकती थीं।"

वल्ली ने कहा, "नहीं मुझे उतरना नहीं है। मैं इसी से वापिस जाऊँगी।" उसने फौरन अपनी जेब से तीस पैसे निकाले और कंडक्टर को दिए।

"क्यों, उतरना क्यों नहीं?"

"नहीं, कोई विशेष बात नहीं, मुझे तो केवल बस की सवारी करनी थी और कुछ नहीं।"

"अब जब तुम यहाँ तक आई ही हो, ज़रा नीचे उतरो, घूमो फिरो, इधर-उधर देखो, कहाँ क्या है?"

"अकेले ही? नहीं, नहीं, मुझे डर लगता है।"

वल्ली की बातों में कंडक्टर को बहुत आनन्द आ रहा था। उसने पूछा, "बस में अकेले आते वक़्त क्या तुम्हें डर नहीं लगा था?"

"नहीं, उसमें कोई डर नहीं लगा," उसने उत्तर दिया।

"तो फिर नीचे उतरो, सामने की दुकान तक जाओ, कुछ घूमो फिरो, खाओ-पियो, इसमें डरने की कोई बात नहीं।"

"नहीं, नहीं, मुझे नहीं जाना कहीं।"

"अच्छा, ठीक है मैं ही कुछ तुम्हारे खाने-पीने के लिए ले आता हूँ।"

"नहीं, नहीं, मेरे पास ज़्यादा पैसे नहीं हैं। तुम मेरा टिकट दे दो, सिर्फ़ टिकट।"

"तुम्हारा कुछ भी ख़र्च नहीं होगा, खाने पीने का सामान मैं ही लाऊँगा अपनी तरफ से।"

"नहीं, नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए", उसने दृढ़ता से कहा।

कंडक्टर अपने कंधे उचकाकर चल दिया। वह नीचे आ गया। वल्ली वहीं बैठी इन्तज़ार कर रही थी। थोड़ी देर बाद ही बस के चलने का समय हो गया। इस बार सवारियाँ कम ही थीं।

कंडक्टर वल्ली के पास आया। टिकट देते हुए उसने फिर पूछा, "तुम्हारी माँ तुम्हें खोज नहीं रही होगी?"

"नहीं, मुझे कोई नहीं खोज रहा होगा।"

बस चल दी। लौटते वक़्त वही सब दृश्य। वल्ली को इस बार भी उतना ही अच्छा लगा जितना उसे जाते समय लगा था। लेकिन तभी उसने देखा - सड़क के किनारे एक छोटी सी गाय मरी हुई पड़ी है। लगता था कि जैसे वह किसी तेज़ ट्रक से टकरा गई थी।

"क्या यह वही गाय थी जो जाते समय हमारी बस के आगे आगे भाग रही थी?" वल्ली ने कंडक्टर से पूछा।

कंडक्टर ने अपना सिर हिलाकर हाँ कर दी। वल्ली को बहुत दुख हुआ। थोड़ी देर पहले यही गाय कितनी सुन्दर और प्यारी लग रही थी। अब एकदम बेजान हो गई थी। उसकी सारी सुन्दरता समाप्त हो गई थी। अब तो वह बहुत भयानक दिखाई दे रही थी। टाँगें खुली, मुँह एक तरफ को, आँखें पथराई हुई, चारों तरफ ख़ून ही ख़ून - सब कुछ डरावना सा लग रहा था।

बस चलती रही। वल्ली के मन में गाय की तस्वीर घूमती रही - मरी हुई गाय, भयानक, डरावने रूप में। उसका सारा जोश ठण्डा पड़ गया था। अब तो उसकी खिड़की से बाहर देखने की इच्छा भी खत्म हो गई थी।

वह सीट पर बैठ गई, एकदम चिपककर, उदास-उदास। बस गाँव में पहुँच गई - तीन बजकर चालीस मिनट हो गए थे। बस की सवारियाँ उतरीं। वल्ली ने भी ऊपर से नीचे तक ख़ुद को देखा - उतरते-उतरते कंडक्टर से बोली, "अच्छा-अच्छा फिर मिलेंगे।"

कंडक्टर ने हँसकर उत्तर दिया, "ठीक है मेमसाहब, जब भी बस की सवारी करनी हो, बेहिचक आ जाना। और हाँ किराया लाना नहीं भूलना।"

वल्ली हँसी, कूदकर बस से उतर गई। भागकर सीधी अपने घर गई।

जैसे ही घर में घुसी, उसने देखा माँ सोकर भी उठ गई है और पड़ोस वाली चाची से बात कर रही है। यह चाची चटर-चटर कर बहुत ज़्यादा बोलती थी। कभी चुप नहीं होती थी। बस एक बार शुरू होने की देर थी।

वल्ली को देखते ही चाची ने कहा, "तुम कहाँ थी", उनका पूछने का ढंग कुछ ऐसा था जैसे उन्होंने ख्वामख्वाह पूछा है क्योंकि उनको उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। वल्ली ने उत्तर नहीं दिया वरन् वह धीरे से मुस्करा दी। माँ और चाची अपनी बातचीत में लगी रहीं।

"हाँ, बहन जी, आप ठीक कह रही हैं, हमारे आसपास और इस पूरी दुनिया में इतना कुछ है कि सबको जानना या समझना बहुत मुश्किल है।" माँ चाची से कह रही थी, "और जब हम किसी के बारे में जानते भी हैं तो भी हम उसको पूरी तरह नहीं समझ सकते।"

"हाँ, आपने ठीक कहा।" वल्ली बोल पड़ी।

"क्या? तुम कुछ बोली?" माँ ने वल्ली से पूछा।

"हाँ माँ, मैं कह रही थी, कि आप ठीक कह रही हैं। मैं भी यही मानती हूँ। दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, उसे हम पूरी तरह जान ही नहीं सकते।" वल्ली ने उत्तर दिया।

"देखो, क्या बित्ती सी लड़की", चाची बोली, "और हमारी बातचीत में अपनी टाँग अड़ा रही है। जैसे दादी हो।"

वल्ली अपने मन ही मन मुस्कराई और वहाँ से हट गई। वह अपनी मुस्कराहट माँ और चाची को नहीं दिखाना चाहती थी क्योंकि इससे कोई लाभ भी नहीं था। ●

सभी चित्र : आर.के. लक्ष्मण

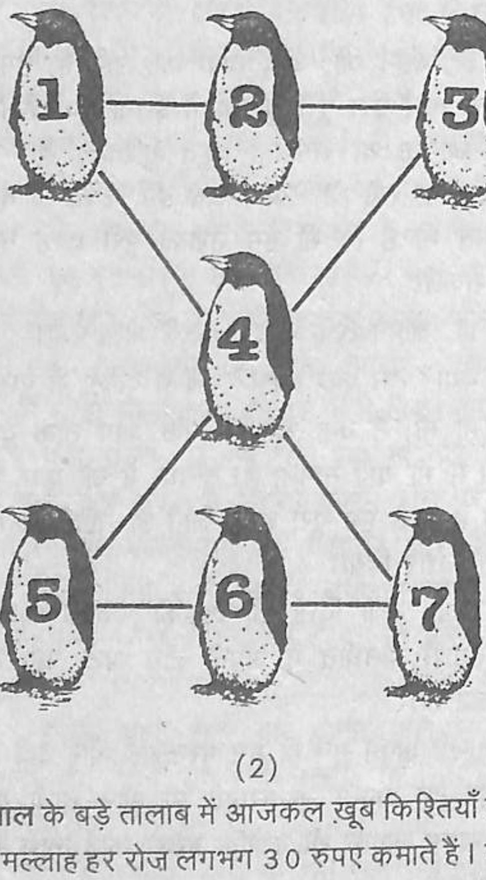
(कहानी तथा चित्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सौजन्य से 'आधुनिक एशियाई कहानियाँ' से साभार)



माथापच्ची

(1)

ये पेंग्विन अपनी–अपनी निर्धारित जगह से भटक गए हैं। क्या तुम इन्हें ऐसे खड़ा कर सकते हो कि इन पर लिखे अंकों का जोड़ 12 आए। जोड़ सब तरफ से 12 ही आना चाहिए। आड़े में, खड़े में और तिरछे में भी।



(2)

भोपाल के बड़े तालाब में आजकल ख़ूब किश्तियाँ चलती हैं। मल्लाह हर रोज लगभग 30 रुपए कमाते हैं। उनका कहना है कि अगर मल्लाहों की संख्या कुछ कम हो जाए, (अगर पाँच मल्लाह भी कम हो जाएँ) तो बाक़ियों को रोज 40 रुपए की आमदनी होने लगेगी। लेकिन सवाल तो यह है कि अभी यहाँ कितने मल्लाह हैं?

(3)

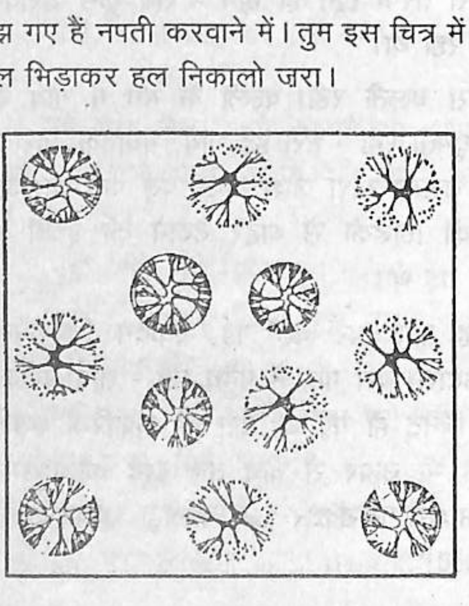
9 8 7 6 5 4 3 2 1 = 0

इन अंकों को इसी क्रम में रखते हुए कुछ गणितीय निशान इनके बीच लगाकर इस समीकरण को सही बनाना है। तुम्हारी सहायता के लिए 4 धन (+) के निशान, 3 ऋण (–) के निशान और 1 भाग (÷) का निशान उपलब्ध है। इनकी मदद से ज़रा हाथ आजमाकर देखो।

(4)

रामदीन के चार बेटे हैं। मरने के बाद जब रामदीन की वसीयत खोली गई तो पता चला उसने अपने फलदार पेड़ों का बगीचा अपने चारों बेटों में बराबर–बराबर बाँटने को लिखा था। यह भी शर्त थी वसीयत में कि चारों बेटों के हिस्से ऐसे निकाले जाएँ कि न सिर्फ़ उनका क्षेत्रफल बराबर हो बल्कि उनके आकार भी एक जैसे हों। और जमीन के उन चारों टुकड़ों में 3–3 पेड़ आएँ।

रामदीन का वकील और गाँव का पटवारी तो उलझ गए हैं नपती करवाने में। तुम इस चित्र में अपनी अक़्ल भिड़ाकर हल निकालो ज़रा।



(5)

हेमा के पास दो घड़ियाँ हैं। एक जो चलती ही नहीं और दूसरी जो हरदिन एक घण्टा पीछे खिसकती जाती है। अब अगर सही समय की कसौटी पर परखा जाए तो बता सकते हो हफ़्ते भर में कौन–सी घड़ी ज़्यादा बार सही–सही समय बताती होगी?

(6)



यहाँ बारह चवन्नियाँ जमी हुई हैं। छह के चित ऊपर है तो छह के पट। ध्यान से देखो तो पता चलेगा कि चारों आड़ी कतार में चित भी आ रहे हैं और पट भी। इसे हमें बदलना है। चवन्नियों को बिना पलटाए इस तरह जमाना है कि हर आड़ी कतार में या तो सिर्फ़ चित हों या पट। और साथ में यह शर्त भी जुड़ी है कि सिक्कों को खिसकाने में हम सिर्फ़ एक सिक्के को छू सकते हैं। कैसे कर पाएँगे केवल एक सिक्के को छूकर इतना सब? तुम कुछ सुझाओ।

वर्ग पहेली – 69

1	■	2	■	3	■	4	5	
6						■		■
	■		■		■	7		
■	8	■	9		10	■		■
11				■	12			
■		■	13	14		■		■
15			■		■	16	■	17
■		■	18					
19			■		■		■	

संकेत : बाएँ से दाएँ

4. दान से मन क्यों, झोली भी भर जाएगी (3)
6. बर्दाश्त करने की ताक़त (6)
7. गति या प्रवाह (3)
9. इतनी लाज करोगे तो बीमारी का क्या होगा? (3)
11. मुखिया (4)
12. कल चीन जाएगा अनुकरण करने वाला (4)
13. निराश न हो, रसद मिलेगा (3)
15. रुचि राग दीपक गा रही है (3)
18. खलबली पैदा करने वाला (6)
19. अभी की एक मौसमी फली (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. सबेरे नहाने में चने का आटा (3)
2. मकान न सही, जंगल तो है (3)
3. क्रम (4)
5. कॉलेज (6)
8. तीखा स्वाद महसूस होना (6)
9. इरा ना जाओ, कुआँ है (3)
10. रचना करना, पैदा करना (3)
14. काश बन मयूर नाचे तो ओस गिरे (4)
16. थोड़ा सा मुरमुरा, बाद में नीम; रखेगा हिसाब किताब (3)
17. मेहरबानी (3)

मनीष कुमार गौतम, बघराजी, जबलपुर द्वारा भेजी गई पहेली पर आधारित।

पेज 8 पर छपी पहेलियों का हल है; मूली और मकड़ी

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली – 69 का हल जून 1997 के अंक में देखें।

क़िस्सा बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो। वह बहुत शरारती था।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो एक बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। जब उनसे पीछा छूटा तो नीलकेशिनी नामक एक लड़की उसे अपने घर ले गई। एक दिन तंग आकर लड़की ने उसे अंधेरी कोठरी में बन्द करवा दिया। बुरातीनो कोठरी से निकल भागा। लेकिन एक बार फिर वह लोमड़ी और बिल्ले के चंगुल में जा फँसा।

दोनों ने बुरातीनो को इस बात पर राज़ी कर लिया कि वह अपने सोने के सिक्के ज़मीन में गाड़ दे ताकि दौलत का पेड़ उग आए। बुरातीनो ने ऐसा ही किया और पेड़ उगने का इन्तज़ार करने लगा। लोमड़ी ने अपनी चाल असफल होते देखी, तो उसने पुलिस को ख़बर कर दी। पुलिस के जासूस कुत्ते उसे पकड़कर ले गए और फिर उसे नगर के बाहर एक गन्दे तालाब में फेंक दिया।

तालाब के नन्हे-नन्हे जलकीट उसे परेशान करने लगे। तालाब में रहने वाले कूबर कछुए ने उसे उनसे बचाया और लोमड़ी तथा बिल्ले की करामात के बारे में बताया। बूढ़ा कछुआ तालाब की तली में गया और बुरातीनो के लिए एक क़ीमती चाबी लेकर आया। अब आगे पढ़ो....

बुरातीनो का दुख के साथी से मिलना

बूढ़े कछुए ने मूरखनगरी से निकल भागने का रास्ता नहीं बतलाया था।

बुरातीनो की जिधर नज़र गई वह उधर ही दौड़ चला। काले-काले वृक्षों के पीछे तारे टिमटिमा रहे थे। रास्ते के अगल-बगल चट्टानें उठी हुई थीं। तंग पहाड़ी रास्ते पर धुंधले बादल छाए हुए थे।

अचानक बुरातीनो के आगे एक भूरे पिण्ड सा कुछ उछला। ठीक इसी वक़्त कुत्ते भौंकने लगे।

बुरातीनो एक चट्टान से सट गया। उसके पास से दो पुलिस बुलडॉग तेज़ी से गुज़रे।

भूरा पिण्ड तेज़ी से रास्ते को पार कर ढलान की ओर बढ़ गया। बुलडॉग उसका पीछा कर रहे थे।

जब कुत्तों की धम-धम और भूँकने की आवाज़ दूर चली गई, तो बुरातीनो सिरे पर पैर रखकर भागा। वह इतनी तेज़ी से दौड़ रहा था कि पेड़ की काली-काली शाखाओं के पीछे तारे तक भागते नज़र आ रहे थे।

फिर उस भूरे पिण्ड ने छलाँग लगाकर दुबारा रास्ता पार किया। बुरातीनो ने देखा कि यह एक खरगोश है और उसकी पीठ पर उसके दोनों कान पकड़कर पीले चेहरेवाला एक नन्हा आदमी बैठा हुआ है।

ढलानदार रास्ते पर पत्थर लुढ़के - बुलडॉगों ने खरगोश का पीछा करते हुए छलाँग लगाकर रास्ता पार किया और फिर से चारों ओर ख़ामोशी छा गई।





वह पहियों से बनी लीक में औंधे मुँह लुढ़क पड़ा था, ख़ुद-को मरा हुआ समझ बैठा था, इसीलिए यह रहस्यपूर्ण वाक्य उसने मिनमिनाया था, "अलविदा, मलवीना! सदा-सदा के लिए अलविदा!"

बुरातीनो ने उसे झकझोरा, उसकी टाँग खींची - लेकिन पियेरो बिना हिले-डुले पड़ा रहा। तब बुरातीनो ने अपनी जेब में पड़ी हुई एक जोंक को ढूँढ निकाला और मृतप्राय आदमी की नाक पर उसे चिपका दिया।

जोंक ने तुरन्त ही चिपककर उसकी नाक नोच ली। तब पियेरो झट से उठ बैठा, वह सिर झटकने लगा, जोंक को नाक से छुड़ाया और कराहने लगा, "आह, लगता है मैं अभी ज़िन्दा हूँ...."

बुरातीनो ने उसके खड़िया से पुते सफ़ेद गालों को पकड़कर चूम लिया और पूछने लगा, "तुम यहाँ कैसे आ फँसे? भूरे ख़रगोश पर सवार होकर तुम कहाँ भागे जा रहे थे?"

"बुरातीनो, बुरातीनो!" पियेरो ने चारों तरफ नज़र डालते हुए कहा, "मुझे कहीं जल्दी से छिपा लो.... ये कुत्ते भूरे ख़रगोश का नहीं, मेरा ही पीछा कर रहे थे, सिनियोर कराबास बाराबास दिन-रात मेरा पीछा कर रहा है। उसने मूरखनगरी में जासूस कुत्ते किराये पर लिए हैं और मुझे ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने की कसम खाई है।"

दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आ रही थी। बुरातीनो ने पियेरो की बाँह पकड़ी और उसे घसीटकर छुईमुई की सघन झाड़ियों तक ले आया जो पीले-पीले गोलाकार फूलों से ढकी हुई थी।

धूल-धूसरित पत्तों पर लेटे हुए पियेरो ने फुसफुसाकर बतलाना शुरू किया, "सुनो, बुरातीनो, रात में एक बार ख़ूब तेज़ आँधी चल रही थी, पानी

बुरातीनो इस तरह बेतहाशा भाग रहा था कि काली-काली शाखाओं के पीछे वे ही तारे अब भयंकर गति से दौड़ते लग रहे थे।

तीसरी बार भूरे खरगोश ने छलाँग लगाकर रास्ता पार किया। उस नन्हे आदमी का सिर डाल से टकराया और वह ख़रगोश की पीठ से लुढ़ककर सीधे बुरातीनो के पैरों में आ गिरा।

"भौं-भौं! पकड़ लो उसे!" ख़रगोश का पीछा करते पुलिस बुलडॉग भागते आ रहे थे, उनकी गुस्सैल आँखें अंगारे बरसा रही थीं, उन्होंने न तो बुरातीनो को देखा और न पीले आदमी को ही।

"अलविदा, मलवीना! सदा-सदा के लिए अलविदा!" रोनी आवाज़ में वह नन्हा आदमी मिनमिनाया।

बुरातीनो उस पर झुका और उसने हैरानी से देखा कि लम्बी-लम्बी बाँहों वाली सफ़ेद कमीज़ पहने यह कोई और नहीं पियेरो ही था।

झमझम बरस रहा था। सिनियोर काराबास बाराबास अलावघर के पास मज़े से बैठा हुआ पाइप पी रहा था। सभी कठपुतलियाँ सो रही थीं। मैं ही अकेला जाग रहा था। मुझे नीलकेशी लड़की की याद आ रही थी ..."

"अरे, तू भी किसकी याद करने लगा था!" बुरातीनो ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "मैं कल शाम को ही उसके यहाँ से निकल भागा हूँ - मकड़ी के जालोंवाले तहखाने से...."

"क्या कह रहे हो? तुमने नीलकेशिनी को देखा है? तुमने मेरी मलवीना को देखा है?"

"हुँ, कोई हूर है क्या! निरी भोंदू लड़की है और हाथ धोकर पीछे पड़ती है!"

पियेरो हाथ हिलाते हुए उछल पड़ा।

"मुझे उसके पास ले चलो ... अगर तुम मलवीना को ढूँढने में मेरी सहायता करोगे तो मैं तुम्हें सोने की चाबी का रहस्य बतलाऊँगा ..."

"क्या कहा!" बुरातीनो खुशी से चीख पड़ा। "तो तुम सोने की चाबी का रहस्य जानते हो?"

"सब जानता हूँ, चाबी कहाँ पर है, उसे किस प्रकार पाया जा सकता है और यह भी जानता हूँ कि उससे एक दरवाज़ा खुलता है ... मैंने इस रहस्य के बारे में चुपके-चुपके सुन लिया था, इसीलिए सिनियोर काराबास बाराबास जासूस कुत्तों की मदद से मुझे ढूँढ रहा है।"

बुरातीनो ख़ूब जी भरकर डींग मारना चाह रहा था, यह बतलाना चाह रहा था कि वह रहस्यमय चाबी उसकी जेब में ही पड़ी हुई है। जल्दबाज़ी में कहीं वह भेद न खोल बैठे, इसलिए उसने झट से अपनी टोपी उतारी और मुँह में ठूँस ली।

पियेरो मलवीना के पास ले चलने की बार-बार मिन्नतें कर रहा था। बुरातीनो ने उँगली के इशारे से इस मूर्ख को यह समझाया कि अन्धेरी सुनसान रात में वहाँ जाना ख़तरनाक होगा, सुबह होते ही उस लड़की के पास झट से पहुँच जाएँगे।



(अगले अंक में जारी)

(सोने की चाबी - किस्सा बुरातीनो का से साभार)

(लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय

सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोशिकन)



किशन सिंह, छह वर्ष, टीकमगढ़, म.प्र.



शिप्रा सिंह, नौ वर्ष, दिल्ली

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97



सोनू चौबे, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना